

यह NOTES PDF [RK EXPERT CLASSES] Raju Sir के द्वारा तैयार किया गया है। इसमें कक्षा 10 के [इतिहास , राजनीति शास्त्र ,अर्थशास्त्र ,भूगोल ,आपदा प्रबंधन] सबसे महत्वपूर्ण सभी प्रश्न लघुउत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का उत्तर लिखा गया है जो 2026 बोर्ड परीक्षा में भी पूछा जाएगा है वह सबसे महत्वपूर्ण है आप इन प्रश्नों को विशेष ज्यादा ध्यान देकर याद कर लेते हैं। तो सभी प्रश्न निश्चित रूप से इसी में से रहेगा, धन्यवाद By Raju Sir (RK EXPERT CLASSES)

<b>YouTube Channel</b>	<a href="#">Click Here</a>
<b>WhatsApp Channel</b>	<a href="#">Join</a>

### 20 February 10th Social Science Subjective Question 2026

#### 1. इटली तथा जर्मनी के एकीकरण में ऑस्ट्रिया की भूमिका क्या थी?

उत्तर-इटली तथा जर्मनी के एकीकरण के मार्ग में ऑस्ट्रिया बाधक बना हुआ था। 1830 की क्रांति के बाद इटली में भी नागरिक आंदोलन शुरू हो गए। मेजिनी ने इन नागरिक आंदोलनों का उपयोग करते हुए उत्तरी और मध्य इटली में एकीकृत गणराज्य स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटर्निख द्वारा इन राष्ट्रवादी नागरिक आंदोलनों को दबा दिया गया जिससे इटली का एकीकरण रुक गया। जर्मनी में भी राष्ट्रवादी भावना को कुचलने में ऑस्ट्रिया ने मेटर्निख द्वारा दमनकारी कानून कार्ल्सवाद के आदेश को जारी किया। अतः दोनों देशों के एकीकरण में ऑस्ट्रिया बाधक था।

#### 2. रूसी क्रांति के किन्हीं दो कारणों को लिखें।

उत्तर-1917 ई० की रूसी क्रांति के दो महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित थे-

- जार की निरंकुशता एवं अयोग्य शासन-जार निकोलस II जिसके शासन काल में क्रांति हुई। राजा के दैवी अधिकारों में विश्वास रखता था। उसे प्रजा की सुख-दुख की कोई चिंता नहीं थी। जार ने जो अफसरशाही बनाई थी वह अस्थिर, जड़ और अकुशल थी। गलत सलाहकारों के कारण जार की स्वेच्छाचारिता बढ़ती गई और जनता की स्थिति बदतर होती चली गई।
- कृषकों की दैनिकीय स्थिति-रूस में जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग कृषकों का था लेकिन उनकी स्थिति अत्यंत दैनिकीय थी। हालाँकि 1861 ई० में जार एलेक्जेंडर द्वितीय के द्वारा कृषि दासता समाप्त कर दी गई थी परंतु इससे किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। उनके खेत बहुत छोटे-छोटे थे जिन पर वे पुराने ढंग से खेती करते थे। पूँजी के अभाव तथा करों के बोझ से दबे होने के कारण उनके पास क्रांति के सिवाय कोई चारा नहीं था।

### 3. जर्मनी के एकीकरण की बाधाएँ क्या थीं?

उत्तर-जर्मनी के एकीकरण में निम्नलिखित प्रमुख बाधाएँ थीं-

- (i) लगभग 300 छोटे-बड़े राज्य
- (ii) इन राज्यों में व्याप्त राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक विषमताएँ
- (iii) राष्ट्रवाद की भावना का अभाव
- (iv) ऑस्ट्रिया का हस्तक्षेप तथा
- (v) मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति

### 4. वियना काँग्रेस की दो उपलब्धियाँ बताइए।

उत्तर-वियना सम्मेलन की मुख्य उपलब्धियाँ थी- (i) नेपोलियन द्वारा पराजित राजवंशों की पुनर्स्थापना का प्रयास किया गया। (ii) फ्रांस और स्पेन में बूर्बो राजवंश को फिर स्थापित किया गया। फ्रांस में लुई 18वाँ को राजगद्दी सौंपी गयी। इटली में ऑस्ट्रियाई राज परिवार को सत्ता सौंपी गयी। नेपोलियन द्वारा स्थापित 39 राज्यों के जर्मन महासंघ को भंग नहीं किया गया। इस प्रकार वियना व्यवस्था द्वारा यूरोप में राजनीतिक परिवर्तन कर पुरानी सत्ता को बहाल किया गया।

### 5. जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने कौन-सी नीति अपनायी?

उत्तर-प्रशा का राजा विलियम प्रथम ने प्रख्यात राष्ट्रवादी और कूटनीतिज्ञ बिस्मार्क को अपना प्रधानमंत्री (चांसलर) नियुक्त किया। जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने 'रक्त और तलवार' की नीति अपनायी। सबसे पहले बिस्मार्क ने

### 6. मेजिनी कौन था?

उत्तर-मेजिनी को इटली के एकीकरण का पैगंबर या मसीहा कहा जाता है। वह साहित्यकार गणतांत्रिक विचारों का समर्थक और योग्य सेनापति था। अपने गणतंत्रवादी उद्देश्यों के प्रचार के लिए उसने 1831 में 'यंग इटली' की स्थापना की। मेजिनी का उद्देश्य ऑस्ट्रिया के प्रभाव से इटली को मुक्त करवाना तथा संपूर्ण इटली का एकीकरण करना था।

7. गैरीबाल्डी कौन था? इटली के एकीकरण में उसकी क्या भूमिका थी? अथवा गैरीबाल्डी के कार्यों की चर्चा करें।

उत्तर- इटली के एकीकरण का द्वितीय चरण गैरीबाल्डी की तलवार ने पूरा किया। वह युद्ध की नीति में विश्वास करता था। उसने सशस्त्र युवकों की एक टुकड़ी बनाई जो 'लाल कुर्ती' कहलाए। इनकी सहायता से उसने सिसली पर अधिकार कर वहाँ गणतंत्र की स्थापना की। वह पोप के राज्य पर भी आक्रमण करना चाहता था, परंतु कावूर ने इसकी अनुमति नहीं दी

8. साम्यवाद एक नयी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था थी। कैसे?

उत्तर-रूस में क्रांति के बाद नई सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की स्थापना हुई। सामाजिक असमानता समाप्त कर दी गयी। वर्गविहीन समाज का निर्माण कर रूसी समाज का परंपरागत स्वरूप बदल दिया गया। पूँजीपति और जमींदार वर्ग का उन्मूलन कर दिया गया। समाज में एक ही वर्ग रहा, जो साम्यवादी नागरिकों का था। काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार बना दिया गया। व्यक्तिगत संपत्ति समाप्त कर पूँजीपतियों का वर्चस्व समाप्त कर दिया गया। देश की सारी संपत्ति का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं की रूसी क्रांति के बाद साम्यवाद एक नई आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था थी।

9. सर्वहारा वर्ग किसे कहते हैं?

उत्तर - समाज का वह लाचार वर्ग जिसमें गरीब किसान, कृषक मजदूर, सामान्य मजदूर, श्रमिक एवं आम गरीब लोग शामिल हो उसे सर्वहारा वर्ग कहते हैं। इस वर्ग के लोगों के पास बुनियादी चीजें भी उपलब्ध नहीं होतीं। धनी वर्ग इस वर्ग को उपेक्षित नजरों से देखते हैं।

10. असहयोग आन्दोलन प्रथम जनांदोलन था। कैसे?

उत्तर - 1920 ई० में गाँधीजी के नेतृत्व में चलाया गया असहयोग 'आन्दोलन इस मायने में प्रथम जन-आन्दोलन था कि इससे पूर्व के सभी आन्दोलन आर्थिक या सामाजिक आधार पर किसी वर्ग-विशेष के द्वारा अपने हितों की रक्षा अथवा पूर्ति के लिए चलाये गये थे जबकि असहयोग आन्दोलन के कार्य ऐसे थे कि हर तरह के लोग इसमें अपना योगदान कर सकें। जैसे- सरकारी उपाधियों एवं अवैतनिक पदों का त्याग, सरकारी और अर्द्धसरकारी उत्सवों का बहिष्कार, सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों का बहिष्कार, सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि। जनता ने अपने-अपने स्तर के अनुरूप इन कार्यक्रमों में योगदान दिया और असहयोग आन्दोलन को जन-आन्दोलन का रूप प्रदान किया।

**11. असहयोग आंदोलन क्यों स्थगित किया गया?**

उत्तर-महात्मा गांधी के नेतृत्व में आरंभ किया गया असहयोग आंदोलन (1920-22) सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांत पर आधारित आंदोलन था। लेकिन 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के चौरा-चौरी नामक स्थान पर आंदोलनकारियों की उग्र भीड़ ने पुलिस थाना पर हमला कर 22 पुलिस कर्मियों को ज़िंदा जला दिया। इस घटना से गांधीजी काफी दुखित हुए। चूँकि यह आंदोलन पूरी तरह अहिंसात्मक था इसमें हिंसा का कोई स्थान नहीं था। अतः असहयोग आंदोलन का स्थगित करना पड़ा।

**12. दांडी यात्रा का उद्देश्य क्या था?**

उत्तर नमक के व्यवहार और उत्पादन पर सरकारी नियंत्रण था। गाँधीजी इसे अन्याय मानते थे एवं इसे समाप्त करना चाहते थे। नमक कानून भंग करने के लिए 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी अपने 78 सहयोगियों के साथ दांडी यात्रा (नमक यात्रा) पर निकले। वे 6 अप्रैल, 1930 को दांडी पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने समुद्र के पानी से नमक बनाकर नमक कानून भंग किया। इसी के साथ नमक सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा आंदोलन) आरंभ हुआ और शीघ्र ही पूरे देश में फैल गया।

**13. चम्पारण सत्याग्रह का संक्षिप्त विवरण दें।**

उत्तर-चंपारण सत्याग्रह अप्रैल, 1917 में बिहार के चंपारण जिले में हुआ था। जिसके कारण वहाँ के किसानों के ऊपर निलहे बागान मालिकों का अत्याचार था। उस समय चम्पारण में बागान व्यवस्था के अंतर्गत नील की खेती बड़े पैमाने पर की जा रही थी। निलहे साहबों ने अपनी कोठियाँ स्थापित कर रखी थी। ये किसानों को तीनकठिया प्रणाली के अंतर्गत नील की खेती करने को बाध्य करते थे। किसानों को उपज का उचित मूल्य भी नहीं मिलता था जिससे उनकी स्थिति काफी दयनीय हो गई थी। इसके अलावा किसानों से बेगारी भी बागान मालिकों द्वारा कराई जाती थी। इससे किसानों की स्थिति काफी चिंताजनक हो गयी थी। इन्हीं बातों को लेकर महात्मा गाँधी ने चंपारण में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया।

**14. बिहार के किसान आंदोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।**

उत्तर- 1920 के दशक में बिहार के किसानों ने अपने को संगठित करना शुरू किया। किसानों के प्रति उदासीन रवैये का फायदा उठाकर वामपंथियों ने उन्हें किसान सभाओं के गठन हेतु प्रेरित किया। फलतः 1922-23 में मुंगेर में शाह मुहम्मद जुबैर की अध्यक्षता में किसान सभा का गठन किया

गया। बिहार के किसान आंदोलन के एक प्रखर नेता के रूप में स्वामी सहजानंद सरस्वती का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

**15. औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को किस तरह प्रभावित किया?**

**अथवा, उद्योग के विकास ने किस प्रकार मजदूरों को प्रभावित किया? उन पर पड़ने वाले प्रभावों पर आपकी क्या राय है?**

उत्तर- औद्योगीकरण के फलस्वरूप बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए जिसके समक्ष छोटे उद्योग टिक नहीं सके। सामाजिक भेद-भाव की शुरुआत हो गई। औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को इस तरह नष्ट-भ्रष्ट कर दिया कि उनके पास दैनिक उपयोग की वस्तुओं को खरीदने के लिए धन नहीं रहा। अब मजदूर और बेरोजगार कारीगरों ने झुंड बनाकर घूमना शुरू किया और मशीनों को तोड़ने में लग गये। अपनी स्थिति में सुधार की अपेक्षा उन्होंने आन्दोलनों को शुरू किया। इससे वर्ग संघर्ष की शुरुआत हुई।

**16. अक्टूबर क्रांति से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- 1917 में रूस में जो क्रांति हुई उसे अक्टूबर क्रांति अथवा बोल्शेविक क्रांति के नाम से जाना जाता है। यद्यपि यह क्रांति 7 नवंबर, 1917 को हुई थी (नई ग्रेगोरियन कैलेंडर)। परंतु पुराने रूसी कैलेंडर के अनुसार वह दिन 25 अक्टूबर, 1917 था। इसलिए बोल्शेविक क्रांति, अक्टूबर क्रांति भी कहलाती है।

**17. नई आर्थिक नीति (NEP) पर एक टिप्पणी लिखें।**

उत्तर- लेनिन ने 1921 में एक नई आर्थिक नीति (NEP) लागू की। इसके अनुसार सीमित रूप से किसानों और पूँजीपतियों को व्यक्तिगत संपत्ति रखने की अनुमति दी गई। यह नीति कारगर हुई। खेती की पैदावार बढ़ी तथा उद्योग-धंधों में भी उत्पादन बढ़ा। इससे रूस समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ा। लेनिन ने जिस नई आर्थिक नीति को लागू किया उससे रूस की अर्थव्यवस्था में सुधार हुआ।

**18. खूनी रविवार क्या है?**

उत्तर- रूस में 9 जनवरी, 1905 को लोगों का समूह 'रोटी दो' के नारे के साथ सड़कों पर प्रदर्शन करते हुए सेंट पीटर्सबर्ग स्थित महल की ओर जा रहा था, परंतु जार की सेना इन निहत्थे लोगों पर गोलियाँ बरसाई जिसमें हजारों लोग मारे गए। इसलिए इस दिन को रूस में खूनी रविवार (लाल रविवार) के नाम से जाना जाता है।

**19. रासायनिक हथियारों नापाम एवं एजेंट ऑरेंज का वर्णन करें।**

उत्तर-अमेरिका ने वियतनाम पर आक्रमण में खतरनाक हथियारों, टैंकों एवं बमवर्षक विमानों के व्यापक प्रयोग के साथ-साथ खतरनाक रासायनिक हथियारों का भी प्रयोग किया। ऐसे ही कुछ रासायनिक हथियार थे-नापाम बम, एजेंट ऑरेंज। नापाम बम में नापाम एक कार्बनिक यौगिक होता है जो अग्नि बमों में गैसोलिन के साथ मिलकर एक ऐसा मिश्रण तैयार करता है जो त्वचा से चिपक जाता और जलता रहता है।

एजेंट ऑरेंज एक ऐसा जहर था जिससे पेड़ों की पत्तियाँ झुलस जाती थी तथा पेड़ मर जाते थे। जंगलों को खत्म करने में इसका प्रयोग किया जाता था।

**20. स्लम पद्धति की शुरुआत कैसे हुई? अथवा, स्लम से आप क्या समझते हैं? इसकी शुरुआत क्यों और कैसे हुई?**

उत्तर-छोटे, गंदे और अस्वास्थ्यकर स्थानों में जहाँ फैक्ट्री मजदूर निवास करते थे वैसे आवासीय स्थलों को 'स्लम' कहा जाता है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए जिसमें काम करने के लिए बड़ी संख्या में गाँवों से मजदूर पहुँचाने लगे। वहाँ रहने के कोई व्यवस्था नहीं थी। मजदूर कारखाने के निकट रहें, इसलिए कारखानों के मालिकों ने उनके लिए छोटे-छोटे तंग मकान बनवाए। जिसमें सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। इन मकानों में हवा, पानी तथा रोशनी तथा साफ-सफाई की व्यवस्था भी नहीं थी।

**21. कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगिकीकरण को गति प्रदान की। कैसे?**

उत्तर-वस्त्र उद्योग की प्रगति कोयले एवं लोहे के उद्योग पर बहुत अधिक निर्भर करती थी इसलिए अंग्रेजों ने इन उद्योगों पर बहुत अधिक ध्यान दिया। इंग्लैंड में लोहे और कोयले की प्रचुर मात्रा में खानें थीं। सन् 1815 में हम्फ्री डेवी ने खानों में काम करने के लिए एक 'सेफ्टी लैम्प' का आविष्कार किया। 1815 ई० में हेनरी बेसेमर ने एक शक्तिशाली भट्ठी विकसित करके लौह उद्योग को और भी अधिक बढ़ावा दिया। इस तरह कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगिकीकरण को गति प्रदान की

**22. फैक्ट्री प्रणाली के विकास के किन्हीं दो कारणों को बताइए।**

उत्तर-फैक्ट्री प्रणाली के विकास के दो कारण निम्नलिखित थे-(1) मशीनों एवं नये-नये यंत्रों के आविष्कार ने फैक्ट्री प्रणाली को विकसित किया।

(ii) सस्ते श्रम तथा यातायात की सुविधा भी फैक्ट्री प्रणाली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

**23. अठारहवीं शताब्दी में भारत के मुख्य उद्योग कौन-कौन से थे?**

उत्तर-अठारहवीं शताब्दी तक भारतीय उद्योग विश्व में सबसे अधिक विकसित थे। इस समय कुटीर उद्योग भारतीय हस्तकला उद्योग, शिल्प उद्योग मुख्य रूप से प्रचलित थे। 18वीं शताब्दी तक भारतीय उद्योग विशेषतः वस्त्र उद्योग विश्वविख्यात था।

**24. श्रमिक वर्ग किन परिस्थितियों में नगरों में आए?**

उत्तर-आधुनिक शहरों में जहाँ एक ओर पूँजीपति वर्ग का अभ्युदय हुआ तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग का। शहरों में फैक्ट्री प्रणाली की स्थापना के कारण कृषक वर्ग जो लगभग भूमिविहीन कृषि वर्ग के रूप में थे, शहरों की ओर बेहतर रोजगार के अवसर को देखते हुए भारी संख्या में इनका पलायन हुआ। इस तरह शहरों में रोजगार की अपार संभावनाओं को देखते हुए गाँवों से शहरों की ओर श्रमिक वर्ग का आगमन हुआ।

**25. भूमंडलीकरण के भारत पर प्रभावों को स्पष्ट करें।**

उत्तर- भूमंडलीकरण का प्रभाव भारत पर व्यापक रूप से पड़ा। इसके फलस्वरूप भारत में रोजगार के अवसर बढ़े हैं। भारत में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आगमन हुआ जो विभिन्न तरह के उपभोक्ता सामग्रियों का उत्पादन करती हैं अथवा सेवा क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। भूमंडलीकरण के फलस्वरूप शिक्षा एवं स्वास्थ्य के बेहतर विकल्प उपलब्ध हुए हैं। हम इसके उत्पादों का उपभोग कर रहे हैं। भूमंडलीकरण के कारण भारत में भी लोगों के जीवन स्तर में काफी सुधार आया है। उनका जीवन सुविधापूर्ण हुआ है।

**26. विश्व बाजार किसे कहते हैं?**

उत्तर- विश्व बाजार उन स्थलों के बाजारों को कहते हैं जो विश्व के अनेक देशों की वस्तुएँ आमलोगों के खरीदने के लिए उपलब्ध कराती हों जैसे-भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई।

**27. आर्थिक संकट से आप क्या समझते हैं**

उत्तर-अर्थतन्त्र में आनेवाली वैसी स्थिति जब उसके तीनों आधार कृषि, उद्योग तथा व्यापार का विकास अवरूद्ध हो जाए, जिससे लाखों लोग बेरोजगार हो जाएँ, बैंकों और कम्पनियों का दिवाला निकल जाए तथा वस्तु और मुद्रा दोनों की बाजार में कोई कीमत न रह जाए, आर्थिक संकट कहलाती है।

**28. पाण्डुलिपि क्या है? इसकी क्या उपयोगिता है?**

उत्तर-हस्तलिखित पुस्तक को पाण्डुलिपि कहते हैं। छापाखाना के विकास से पहले हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को तैयार करने की पुरानी तथा समृद्ध परम्परा थी। पाण्डुलिपि काफी नाजुक, पुरानी, महंगी तथा दुर्लभ होती है। ये आम जनता के पहुँच के बाहर थीं। छापाखाना के विकास के पहले पाण्डुलिपि ही पुस्तक का कार्य करती थी। पाण्डुलिपि हमारे पूर्वजों के दुर्लभ ज्ञान का अक्षुण्ण भंडार थीं। इनका अध्ययन करके आसानी से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

**29. गुटेनबर्ग ने मुद्रणयंत्र का विकास कैसे किया?**

उत्तर-गुटेनबर्ग ने अपने ज्ञान और अनुभव से टुकड़ों में बिखरी मुद्रण कला को एकत्रित और संघटित कर टाइपों के लिए पंच, मेट्रिक्स, मोडल आदि बनाने पर योजनाबद्ध ढंग से काम शुरू किया। मुद्रा बनाने हेतु उसने सीसा, टिन और बिस्मिथ का उचित अनुपात में मिश्रित कर एक मिश्रधातु ढ़ूँढ़ निकाला।

**30. न्यू डील से आप क्या समझते हैं? अथवा, न्यू डील क्यों लागू की गई?**

उत्तर- आर्थिक मंदी के प्रभावों को समाप्त करने एवं उसे नियंत्रित करने के उद्देश्य से 1932 में अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलीन डी० रूजवेल्ट ने नई आर्थिक नीति अपनाई जिसे 'न्यू डील' का नाम दिया गया। इस नई नीति के अनुसार जन कल्याण की व्यापक योजना के अंतर्गत आर्थिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियों को नियमित करने का प्रयास किया गया।

**31. ब्रेटन वुड्स सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या था? [2022AI & II]**

उत्तर-ब्रेटन वुड्स सम्मेलन जुलाई, 1944 ई० में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर स्थान पर हुआ था जिसका मुख्य उद्देश्य औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार था। क्योंकि इसी आधार पर विश्व शांति स्थापित की जा सकती थी।

**32. छापाखाना यूरोप में कैसे प्रारंभ हुआ?**

उत्तर-1295 में मार्कोपोलो नामक खोजी यात्री चीन से वुड ब्लॉक छपाई की तकनीक अपने साथ इटली (रोम) लाया। 14वीं शताब्दी में जर्मनी में कागज बनाने के मिल की स्थापना की गई। इस



समय यूरोप में शिक्षा के विकास, व्यापारिक एवं धार्मिक गतिविधियों में वृद्धि होने से मुद्रित सामाग्री की माँग बढ़ती गई। पुनर्जागरण एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बना लेने के बाद 1475 में विलियम कैव्स्टन मुद्रण कला को इंगलैंड में लाए तथा वेस्ट मिनिस्टर कस्बे में उनका प्रथम प्रेस स्थापित हुआ। इस प्रकार छापाखाना यूरोप पहुँचा

### 33. संघीय शासन की दो विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर- (i) संघीय शासन व्यवस्था के अन्तर्गत दो स्तर की सरकारें होती हैं- केन्द्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर।  
(ii) अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं।

### 34. लैंगिक असमानता क्या है?

उत्तर-लिंग के आधार पर समाज में महिलाओं व पुरुषों में जो असमानता पायी जाती है उसे लैंगिक असमानता कहते हैं। यह असमानता सामाजिक आर्थिक राजनीतिक व अन्य क्षेत्रों में पाई जाती है।

### 35. ग्राम पंचायतों के प्रमुख अंग कौन-कौन हैं?

उत्तर- ग्राम पंचायत के प्रमुख चार अंग हैं। इनके नाम हैं- (i) ग्राम सभा  
(ii) मुखिया (iii) ग्राम रक्षा दल एवं (iv) ग्राम कचहरी ।

### 36. संघ राज्य का अर्थ बताएँ ।

उत्तर-जब सत्ता का विभाजन केन्द्रीय, राज्य या क्षेत्रीय स्तर एवं स्थानीय सरकारों के बीच वितरित कर दिया जाता है तो वह संघीय राज्य कहलाता है किन्तु सर्वोच्च सत्ता केन्द्र के पास होती है।

### 37. सत्ता की साझेदारी लोकतंत्र में क्या महत्त्व रखती है?

उत्तर- लोकतंत्र शासन-प्रणाली में जनता का, जनता के लिए तथा जनता के द्वारा शासन होता है। जिस शासन व्यवस्था में राजनैतिक साझेदारी हो, वह अत्यन्त ही सशक्त प्रणाली है। यह हिस्सेदारी की व्यवस्था जिस शासन व्यवस्था में की जाती है लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था कहलाती है। गैर लोकतांत्रिक सरकारें (जैसे एक दलीय शासन प्रणाली, राजशाही या तानाशाही जैसी , स्थितियाँ) सभी को सत्ता में साझेदारी, सभी नागरिकों के लिए सत्ता की व्यवस्था में विश्वास नहीं रखती। ऐसी शासन प्रणाली प्रायः आन्तरिक सामाजिक समूहों में व्याप्त मतभेदों, विभिन्नताओं एवं अन्तरों की या तो अनदेखी करती हैं या इन्हें कुचल कर रख देती हैं। लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था ही सामाजिक विभाजनों

**38. धर्मनिरपेक्ष राज्य का क्या अर्थ है?**

उत्तर-भारतीय संविधान की प्रस्तावना के आधार पर भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है। इसका अर्थ है कि राज्य धर्म का विरोधी नहीं है। परन्तु, राज्य का अपना कोई धर्म भी नहीं है। राज्य सभी धर्मों को समान आदर और संरक्षण देता है तथा सभी धार्मिक समुदायों और वर्गों को एक समान धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। धार्मिक विभेदों के बीच सामंजस्य, सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव की स्थापना के लिए 'धर्मनिरपेक्षता' की अवधारणा अपनाई जाती है।

**39. परिवारवाद (वंशवाद) क्या है?**

उत्तर- अधिकांश राजनीतिक दल एवं उसके नेता अपने ही परिवार एवं सगे संबंधियों को राजनीति में लाने के लिए चुनाव के अवसर पर उम्मीदवार बनाते हैं। यही राजनीति में परिवारवाद है। हाल के दशकों में यह परंपरा बनी कि जिस जनप्रतिनिधि के निधन या इस्तीफे के कारण कोई सीट खाली हुई उसके किसीपरिजन को चुनाव का टिकट दे दिया, जाए।

**40. भारतीय संविधान के दो प्रावधानों का वर्णन करें जो भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाते हैं।**

उत्तर-(1) भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सांविधानिक संशोधन द्वारा भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य घोषित किया गया है।

(ii) संविधान में इस बात का स्पष्ट उल्लेख कर दिया गया है कि भारत का अपना कोई धर्म नहीं है।

**41. धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा को उल्लेख कीजिए।**

उत्तर - धर्मनिरपेक्षता भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषता है। भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता के लिए निम्नलिखित अनुबंध निर्धारित किए हैं।

(1) भारत का कोई राष्ट्रीय धर्म नहीं है।

(ii) हर नागरिक को अपना धर्म, पूजा पद्धति स्वीकार करने की इजाजत भारतीय संविधान देता है।

(iii) किसी भी धर्म को प्राथमिकता नहीं दी जायेगी।

**42. भावी समाज में लोकतंत्र की जिम्मेवारी और उद्देश्य पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।**

उत्तर समय के साथ लोकतंत्र की जिम्मेवारियाँ एवं उद्देश्य दोनों ही बढ़ते जा रहे हैं। लोकतंत्र के अंतर्गत ही प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकार प्रदान किया जाता है। सत्ता का विभिन्न स्तरों पर विभाजन, सामाजिक न्याय, मौलिक अधिकारों के हनन पर रोक, मानवाधिकार को लागू कराना इत्यादि लोकतंत्र की जिम्मेवारी भावी समाज में इसके उद्देश्यों का भी महत्त्व बढ़ता जा रहा है, क्योंकि जो लोकतांत्रिक व्यवस्था राष्ट्र एवं राज्य स्तर पर है वही व्यवस्था सामाजिक स्तर पर भी कायम हो

जाए। उसके उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जब प्रत्येक नागरिक को उसके अधिकार सम्मान के साथ मिल जाएँ।

#### 43. संघात्मक एवं एकात्मक शासन व्यवस्था में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-सत्ता के विभाजन के आधार पर शासन के दो रूप होते हैं- एकात्मक शासन एवं संघात्मक शासन। जब सत्ता एक ही जगह केंद्रित होती है तो उसे एकात्मक शासन कहा जाता है। जहाँ सत्ता का विकेंद्रीकरण कर दिया जाता है तो वहाँ संघात्मक शासन स्थापित हो जाती है। संघात्मक शासन में दोहरी सरकार होती है-केंद्र सरकार एवं इकाइयों की सरकार। दोनों के अधिकार क्षेत्र विभाजित कर दिए जाते हैं।

#### 44. नगर निगम के आय के स्रोतों को लिखिए।

उत्तर-नगर निगम की आय के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं-

- (i) मकान कर, जल कर, शौचालय कर
- (ii) हाट एवं बाजारों से आय
- (iii) नगर निगम शुल्क जैसे-गाड़ी, रिक्शा, साइकिल, ठेला पर वार्षिक शुल्क
- (iv) सीमा शुल्क
- (v) सरकार द्वारा प्राप्त वित्तीय सहायता

#### 45. सत्ता की साझेदारी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर-सत्ता में साझेदारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार माना गया है। नागरिकों द्वारा सरकारी कामकाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेने की क्रिया को सत्ता में साझेदारी की संज्ञा दी जाती है। अर्थात् राज्य के नागरिकों द्वारा सरकारी स्तर पर निर्णय लेने या निर्णय निर्माण की प्रक्रिया को प्रभावित करना सत्ता में साझेदारी है। यह तभी संभव है जब सत्ता में अधिक से अधिक लोगों की साझेदारी सुनिश्चित हो

#### 46. भारत में किस प्रकार का भाषा नीति है? स्पष्ट करें।

उत्तर- भारत में एक ऐसी भाषा नीति तैयार की गई है जो अधिकतर भारतीय जनसंख्या को शामिल कर सके। भारतीय संविधान में कुल 22 भाषाओं को स्थान प्रदान किया गया है। इन सभी भाषाओं को समान रूप से संवर्धन एवं संरक्षण प्रदान किया गया है। हिंदी, जो कि भारत के 40% से भी अधिक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है उसे राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। हिन्दी को राजभाषा माना गया है। इस प्रकार भारत सरकार ने एक सर्वोत्तम भाषा-नीति अपनाई है

**47. 'चिपको आंदोलन' के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?**

उत्तर - उत्तराखण्ड के दो-तीन गाँवों से प्रारम्भ हुए इस आन्दोलन की शुरुआत 'अंगू' के पेड़ काटने के मुद्दे पर हुआ। ग्रामीणों को खेती भूमि में विकास के लिए अंगू वृक्ष काटने की अनुमति को राज्य सरकार ने खारिज कर दिया। वहीं सरकार ने खेल का सामान बनाने वाली कम्पनी को अंगू वृक्षों को काटने का ठेका दे दिया। इसी मुद्दे ने 'चिपको आन्दोलन' को जन्म दिया। इस आन्दोलन ने आर्थिक शोषण से जुड़े अन्य मुद्दों को भी अपने उद्देश्यों में शामिल कर लिया। आन्दोलन का उद्देश्य था जल, जंगल और जमीन पर एकमात्र नियंत्रण स्थानीय लोगों का हो। स्थानीय भूमिहीन वनकर्मियों ने आर्थिक मुद्दा उठाया एवं न्यूनतम मजदूरी की गारन्टी माँगी। बाहरी ठेकेदारों द्वारा स्थानीय निवासियों को दिए जाने वाले शराब के कारण शराबी बन रहे लोगों की शराबखोरी पर महिलाओं ने आवाज उठाई। परिणाम स्वरूप आन्दोलन के कारण अगले 15 वर्ष तक वनों की कटाई पर सरकार ने रोक लगा दी

**48. दल-बदल कानून क्या है?**

उत्तर- भारत एक बहुदलीय लोकतांत्रिक राष्ट्र है। निर्वाचित प्रतिनिधि अपने हित या अन्य किसी कारण से अपने दल को छोड़कर अन्य दल में मिल जाता है, तो यह क्रिया उस निर्वाचित सदस्य के संदर्भ में दल-बदल कहलाएगा। दल-बदल शक्ति संतुलन को बिगाड़ता है, सरकार को अस्थायी एवं भयभीत बनाए रखता है।

1985 ई० में राजीव गाँधी के नेतृत्व वाली सरकार ने दल-बदल विरोधी अधिनियम संसद में लाया। पारित अधिनियम दल विरोधी कानून बना। यदि किसी पार्टी से निर्वाचित सदस्यों का एक-तिहाई भाग अलग होता है तो यह दल-बदल नहीं कहलाएगा। एक नये दल का गठन माना जाएगा। यदि दल-बदल की घटना में एक-तिहाई से कम निर्वाचित सदस्य हैं तो यह दल-बदल माना जाएगा। दल बदलने वाले निर्वाचित प्रतिनिधि की सदस्यता विधायिका से समाप्त कर दी जाती है।

**49. बिहार में 1974 में हुए छात्र आंदोलन के प्रमुख कारण क्या थे?**

उत्तर- सन् 1971 में आम चुनाव में सत्तारूढ़ कांग्रेस ने 'गरीबी हटाओ' का नारा देकर लोकसभा के चुनाव में बहुमत प्राप्त की। सरकार जब सत्ता में आई तो देश की अर्थव्यवस्था और खराब हो गई। इसका सबसे बड़ा कारण बना बांग्लादेश से आये शरणार्थी। इस समय अमेरिका ने भी भारत को देने वाली सारी सहायता पर रोक लगा दी। 1974 का बिहार छात्र आंदोलन बढ़ती हुई महंगाई, बेरोजगारी, मूल्य वृद्धि, सत्ताधारी दलों द्वारा जनता की उपेक्षा, संवैधानिक मूल्यों का हास तथा कानून और व्यवस्था की गिरती हुई अवस्था के विरोध में किया गया था। इस आंदोलन का नेतृत्व

श्री जयप्रकाश नारायण ने किया था। बिहार एवं गुजरात से प्रारंभ होकर इस आंदोलन का स्वरूप राष्ट्रव्यापी हो गया था।

**50. गुप्त मतदान पत्र क्या है?**

उत्तर- मतदान पत्र वह दस्तावेज है जिससे मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करते हैं। इसे गुप्त रूप से व्यवहार में लाया जाता है।

**51. भावी समाज में लोकतंत्र की जिम्मेवारी और उद्देश्यों पर संक्षिप्त में टिप्पणी लिखें।**

उत्तर-लोकतंत्र में जन कल्याण की भावना निहित होती है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सरकार का प्रधान कार्य विकास एवं सुरक्षा से जुड़ा होता है। भावी समाज के आर्थिक संवृद्धि के लिए लोकतंत्र जिम्मेवार है। इसका उद्देश्य विकास संबंधी कार्यक्रम बनाना एवं जनता को जानकारी प्रदान करना है। लोकतंत्र अपने उद्देश्यों की प्राप्ति की ओर निरंतर अग्रसर है। लोकतंत्र व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अवसर की समानता के लिए जिम्मेवार है। इससे देश में शांति व्यवस्था कायम रहती है।

**52. आर्थिक नियोजन क्या है? इसके मुख्य उद्देश्य क्या हैं?**

उत्तर-आर्थिक नियोजन का अर्थ राष्ट्र की प्राथमिकताओं के अनुसार देश के संसाधनों का विभिन्न विकासात्मक क्रियाओं में प्रयोग करना है। इस प्रकार अर्थव्यवस्था के लिए उपलब्ध संसाधनों का ऐसा नियोजन, समन्वय एवं उपयोग है जिनसे हम समयबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत पूर्व निर्धारित सामाजिक एवं आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त कर डालते हैं।

उद्देश्य – (i) भारत में व्याप्त गरीबी, निर्धनता को समाप्त करना। (ii) शिक्षा के गुणवत्ता में सुधार लाना। (iii) प्रति व्यक्ति आर्थिक आय में बढ़ोतरी करना। (iv) देशवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करना (v) भूमि की उर्वरा शक्ति का शत प्रतिशत उपयोग कर भारत की समृद्धि में अप्रत्याशित बढ़ोतरी करना।

**53. सूचना का अधिकार किस प्रकार लोकतंत्र का रखवाला है?**

उत्तर-सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 लोकतंत्र का रखवाला बन चुका है। इससे प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार मिल गया है कि वह विभिन्न समस्याओं के समाधान की दिशा में सरकार के द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी प्राप्त करे। सरकारी = अधिकारी के लिए माँगी गई सूचना उपलब्ध करना उसका कानूनी उत्तरदायित्व बन गया है। इससे गोपनीयता की जगह प्रशासन में पारदर्शिता आयी है। पदाधिकारी सतर्क, पारदर्शी और निष्पक्ष रहने के लिए बाध्य हो गए हैं।

**54. सूचना के अधिकार आंदोलन के मुख्य उद्देश्य क्या थे?**

उत्तर-सूचना के अधिकार आंदोलन के मुख्य उद्देश्य थे-

- (i) सत्ता में आशिक साझेदारी करना।
- (ii) सरकारी काम-काज पर नियंत्रण रखना।
- (iii) सरकार एवं सरकारी कर्मचारियों के कार्यों का सार्वजनिक करना।

**55. सत्ता के ऊर्ध्वाधर वितरण को बताइए।**

उत्तर किसी भी लोकतांत्रिक संघीय व्यवस्था की सरकार में सत्ता की साझेदारी में सत्ता के वितरण के अनेक स्वरूप होते हैं। सत्ता का उर्ध्वाधर वितरण इन्हीं स्वरूपों में से एक है।

**56. राजनीतिक दल की परिभाषा दें।**

उत्तर-राजनीतिक दल लोगों का ऐसा संगठन होता है जो एक निश्चित सिद्धांत पर एकमत होकर वैधानिक तरीके से राष्ट्रहित की अभिवृद्धि के लिए सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करता है।

**57. राष्ट्रीय राजनीतिक दल क्या हैं?**

उत्तर-वैसे राजनीतिक दल जो लोकसभा या विधानसभा के चुनावों में चार या उससे अधिक राज्यों में कुल वैध मतों का कम से कम 6 (छह) प्रतिशत प्राप्त करते हैं। साथ ही साथ वे लोकसभा में कम से कम 4 प्रतिशत या 11 सीटें हासिल करते हैं। उन्हें भारत के चुनाव आयोग द्वारा राष्ट्रीय राजनीतिक दल की मान्यता दी जाती है।

**58. राजनीति दल लोकतंत्र में क्यों आवश्यक है?**

उत्तर-राजनीतिक दल लोकतंत्र के लिए निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है-

- (i) लोकतंत्र में सरकार का निर्माण बहुमत से होता है।
- (ii) राजनीतिक दल जनमत के निर्माण में सहायक हैं तथा जनता में जागरूकता बढ़ाने में सहायक है।
- (iii) राजनीतिक दल जनता व सरकार के बीच कड़ी का कार्य करते हैं।
- (iv) विरोधी दल के रूप में ये सरकार की मनमानी पर रोक लगाती है।

**59. मिश्रित अर्थव्यवस्था क्या है?**

उत्तर- मिश्रित अर्थव्यवस्था पूँजीवाद एवं समाजवाद इन दोनों अर्थव्यवस्था के बीच का मार्ग है। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था निजी उद्यम तथा सरकार दोनों के द्वारा संचालित होती है। इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र सरकार के अधीन होते हैं तथा शेष क्षेत्र निजी उद्यम के हाथ में दिए जाते हैं। इस व्यवस्था को हम पूँजीवाद एवं समाजवाद के बीच का स्वर्णिम मार्ग कह सकते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था का उदाहरण है।

**60. मानव विकास सूचकांक के घटक बताइए।**

उत्तर-मानव विकास सूचकांक के तीन सूचक हैं- जीवन आशा, शिक्षा प्राप्ति तथा जीवन-स्तर। भारत की पहली मानव विकास रिपोर्ट अप्रैल, 2002 में जारी की गई।

**61. अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- एक अर्थव्यवस्था वह संगठन या व्यवस्था है जिसमें किसी देश या समाज के सदस्य सभी प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का संचालन करते हैं। अर्थव्यवस्था से मतलब उन सभी खेतों, कारखानों, दुकानों, खानों, बैंकों, स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, अस्पताल आदि से होता है जो लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।

**62. आर्थिक नियोजन क्या है?**

उत्तर- आर्थिक नियोजन का अर्थ राज्य अथवा एक निर्धारित सत्ता द्वारा संपूर्ण आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था के एक विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर जान बूझकर आर्थिक निर्णय लेना है। दूसरे शब्दों में, आर्थिक प्राथमिकताओं के आधार पर लक्ष्यों का निर्धारण कर उन्हें एक निश्चित अवधि में पूरा करने का प्रयास ही आर्थिक नियोजन है।

**63. आधारभूत संरचना किसे कहते हैं?**

उत्तर- आधारिक संरचना का अर्थ उन सुविधाओं तथा सेवाओं से है जो देश के आर्थिक विकास के लिए सहायक होते हैं। इसके अन्तर्गत बिजली, परिवहन, संचार, बैंकिंग, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल इत्यादि आते हैं।

**64. आर्थिक आधारभूत संरचना का क्या महत्व है?**

उत्तर-आधारभूत संरचना पर ही अर्थव्यवस्था की अधिरचना खड़ी होती है।

**65. सतत विकास किसे कहते हैं?**

उत्तर- सतत विकास का अर्थ है-ऐसा विकास जो जारी रहे, टिकाऊ रहे अर्थात् सतत विकास, विकास की वह रणनीति है, जो प्राकृतिक साधनों एवं पर्यावरण को क्षति पहुँचाये बगैर वर्तमान एवं भावी दोनों पीढ़ियों के कल्याण को अधिकतम बनाती है। ब्रुंडलैंड आयोग ने सतत विकास के बारे में बताया है कि "विकास की वह प्रक्रिया जिसमें वर्तमान की आवश्यकताएँ, बिना भावी पीढ़ी की क्षमता, योग्यता से समझौता किए पूरी जाती है।" जैसे- कोयला, गैस, वन, पेट्रोलियम, जल, सूर्य का प्रकाश का प्रयोग।

**66. प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में क्या अंतर है?**

उत्तर-जब किसी देश की कुल आय में कुल जनसंख्या से भाग देने पर जो परिणाम आता है उसे प्रतिव्यक्ति आय कहते हैं। इसे औसत आय भी कहा जाता है। वर्ष भर में किसी देश में अर्जित आय की कुल मात्रा को राष्ट्रीय आय कहा जाता है। इसमें देश में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य शामिल किया जाता है।

**67. कुल (सकल) घरेलू उत्पाद क्या है?**

उत्तर-किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा अपनी भौगोलिक सीमा के अन्तर्गत एक लेखा वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को कुल (सकल) घरेलू उत्पाद कहा जाता है। इसमें देश के नागरिकों तथा गैर-नागरिकों के अंशदान को शामिल किया जाता है। यह किसी भी देश के जीवन स्तर का एक संकेत देता है।

**68. प्रतिव्यक्ति आय क्या है?**

उत्तर-जब किसी देश की कुल आय में कुल जनसंख्या से भाग देने पर जो इसे औसत आय भी कहा जाता है। परिणाम आता है उसे प्रतिव्यक्ति आय कहते हैं।  
 प्रतिव्यक्ति आय = राष्ट्रीय आय देश की/कुल जनसंख्या

**69. राष्ट्रीय आय के मापन में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों का वर्णन करें।**

उत्तर-राष्ट्रीय आय के मापन में निम्नलिखित कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं-

(1) पर्याप्त एवं विश्वस्त आँकड़ों की कमी इस संदर्भ में आँकड़ों को कितनी भी शुद्धता से संग्रह किया जाए इसमें कुछ त्रुटि अवश्य देखने को मिलती है। देश जितना ही पिछड़ा हो उसके साथ यह समस्या उतना ही अधिक होता है।



(ii) दोहरी गणना की संभावना किसी अर्थव्यवस्था के अंतर्गत एक ही आय की दो बार गणना कर ली जाती है। जैसे एक व्यक्ति की मासिक आय 50,000 रुपये है और वह अपने नौकर को 2,000 रुपये देता है तो यहाँ उसकी एवं उसके नौकर की आय को अलग-अलग जोड़ना दोहरी गणना की संभावना है।

(iii) मौद्रिक विनिमय-प्रणाली का अभाव-किसी देश की अर्थव्यवस्था में ऐसी बहुत सारी वस्तुओं का समावेश है जिसका विनिमय मुद्रा के द्वारा नहीं होता है। कुछ वस्तुओं के उत्पादक स्वयं भी उपभोग कर लेते हैं या वस्तुओं के बदले दूसरी वस्तुओं को प्राप्त कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में आय के मापन में समस्या उत्पन्न होती है।

#### 70. अर्थव्यवस्था किसे कहते हैं? इनके दो कार्य कौन-कौन से हैं?

उत्तर - अर्थव्यवस्था से तात्पर्य वैसी क्रियाओं का सम्पादन, जिसमें आर्थिक उत्पादन निहित होता है। आर्थर लेविस ने अर्थव्यवस्था के सम्बंध में कहा कि 'अर्थव्यवस्था का सम्बन्ध किसी राष्ट्र के सम्पूर्ण व्यवहार से होता है जिसके आधार पर मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वह अपने संसाधनों का प्रयोग करता है। ब्राउन ने कहा कि 'अर्थव्यवस्था आजीविका अर्जन की एक प्रणाली है।' कहना अनुचित नहीं होगा कि अर्थव्यवस्था आर्थिक क्रियाओं का ऐसा संगठन है जिसके अन्तर्गत लोग कार्य का मौका पाकर अपनी आजीविका का सम्पादन करते हैं। अर्थव्यवस्था के दो कार्य इस प्रकार हैं- (i) लोगों की आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करती है। (ii) लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान करता है

#### 71. ए० टी० एम० क्या है?

उत्तर- ए० टी० एम० कार्ड को ए० टी० एम० सह डेबिट कार्ड भी कहा जाता है। प्लास्टिक मुद्रा के रूप में प्रचलित आज इस मुद्रा का प्रयोग विनिमय क्रिया को सम्पादित करने किया जा रहा है। ए० टी० एम० (Automatic Teller Machine) 24 घण्टे रुपये निकालने तथा जमा करने की सुविधा प्रदान करता है। ए० टी० एम० के लिए एक गुप्त पीन (Code) होता है जिसे बगैर जाने ए० टी० एम० का संचालन सम्भव नहीं।

**72. वस्तु विनिमय प्रणाली क्या है?**

उत्तर-जब किसी वस्तु या सेवा का विनिमय किसी अन्य वस्तु या सेवा के साथ प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है तब इसे वस्तु विनिमय कहते हैं। इसके अंतर्गत वस्तुओं की प्रत्यक्ष अदला-बदली होती है। उदाहरण के लिए जब किसान गेहूँ देकर जुलाहे से कपड़ा लेता है तब इसे वस्तु विनिमय या वस्तु मुद्रा कहेंगे।

**73. चेक और बैंक ड्राफ्ट में अन्तर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- चेक एक प्रकार का लिखित आदेश है जो बैंक में रुपया जमा करने वाला अपने बैंक को देता है कि उसमें लिखित रकम उसमें लिखित व्यक्ति को दे दी जाए।

बैंक ड्राफ्ट वह पत्र है जो एक बैंक अपनी किसी शाखा या अन्य किसी बैंक को आदेश देता है कि उस पत्र में लिखी हुई रकम उसमें अंकित व्यक्ति को दे दी जाए।

**74. मुद्रा के उद्भव से उपभोक्ताओं को क्या लाभ हुआ?**

उत्तर- मुद्रा के उद्भव से कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा एवं सुविधानुसार उसे खर्च कर सकता है। मुद्रा के द्वारा क्रय-शक्ति ऐसे रूप में होती है जिसका हम जिस प्रकार चाहें, उपयोग कर सकते हैं। यह उपभोक्ताओं को अपनी सीमित आय से अधिकतम संतोष प्राप्त करने में सहायता करती है।

**75. मुद्रा की परिभाषा दें।**

उत्तर-मुद्रा विनिमय का वह माध्यम है जो वस्तुओं के मूल्य चुकाने तथा अन्य व्यावसायिक दायित्वों को निपटाने में इस्तेमाल किया जाता है। इसे सरकार द्वारा निर्गत किया जाता है और यह सर्वमान्य होती है।

**76. वित्तीय संस्थान से आप क्या समझते हैं? यह कितने प्रकार के होते हैं?**

उत्तर- आर्थिक विकास के लिए जो संस्थाएँ वित्त की व्यवस्था कृषि, उद्यमी और व्यवसायी के लिए उपलब्ध कराती हैं, वित्तीय संस्थाएँ कहलाती हैं।

यह दो प्रकार की वित्तीय संस्थाएँ होती हैं-

(i) राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ-

(क) भारतीय मुद्रा बाजार (ख) भारतीय पूँजी बाजार।

(ii) राज्य स्तरीय वित्तीय संस्थाएँ-

(क) गैर संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ (ख) संस्थागत वित्तीय संस्थाएँ।

**77. सहकारिता से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- सामान्य अर्थों में सहकारिता का अर्थ है- एक साथ मिल-जुल कर कार्य करना। लेकिन अर्थशास्त्र में सहकारिता की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है-”सहकारिता वह संगठन है जिनके द्वारा दो या दो से अधिक व्यक्ति स्वेच्छापूर्वक मिल-जुलकर समान स्तर पर आर्थिक हितों की वृद्धि करते हैं। इस प्रकार सहकारिता उस आर्थिक व्यवस्था को कहते हैं जिसमें मनुष्य किसी आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिल-जुलकर कार्य करते हैं।

**78. बचत क्या है? अथवा, किसी व्यक्ति की बचत करने की इच्छा किन बातों से प्रभावित होती है?**

उत्तर-बचत, प्राप्त आय में से उपभोग को घटाने पर प्राप्त होता है। बचत आय-उपभोग बचत दो प्रकार का होता है- नगद बचत तथा वस्तु संचय। आय का कुछ हिस्सा ऐसा भी होता है जो ऐसे वस्तुओं पर खर्च किया जाता है, जिसे रखा जा सके। इस प्रकार वह वस्तु संचय का माध्यम है किन्तु कुछ ऐसा संचय या बचत जो वस्तु के रूप में नहीं होता संचय या नकद बचत है।

**79. व्यावसायिक बैंक के प्रमुख कार्यों की विवेचना करें।**

उत्तर-व्यावसायिक बैंक विभिन्न प्रकार के कार्यों के द्वारा समाज एवं राष्ट्र की सेवा करते हैं। इसके निम्नलिखित प्रमुख कार्य हैं-

- (i) जमा को स्वीकार करना - व्यावसायिक बैंकों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य अपने ग्राहकों से जमा के रूप में मुद्रा प्राप्त करना है क्योंकि इसी आधार पर वे अपने लाभ का एक प्रमुख भाग प्राप्त करते हैं। ये स्थायी जमा, चालू जमा, संचयी जमा, आवर्ती जमा के रूप में ग्राहकों के बचत को जमा करते हैं।
- (ii) ऋण प्रदान करना बैंक के पास जो रुपया जमा के रूप में आता है उसमें से एक निश्चित राशि नगद कोष में रखकर उचित जमानत के आधार पर एवं सेवा प्राप्ति हेतु उत्पादन एवं उपभोक्ता को ऋण प्रदान करते हैं।
- (iii) उपयोगिता सम्बन्धी कार्य - बैंक अपने ग्राहकों को विभिन्न उपयोगिता सम्बन्धी सुविधा प्रदान करते हैं। बैंक यात्री चेक एवं साख प्रमाण, पत्र, ए०टी०एम० एवं क्रेडिट कार्ड की सुविधा एवं लॉकर की सुविधा प्रदान करते हैं।

**80. निजीकरण से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर - निजीकरण का अर्थ, निजी क्षेत्र द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों पर पूर्णरूप से या आंशिक रूप से स्वामित्व प्राप्त करना तथा उनका प्रबंधन करना। भारत सरकार ने 1991 ई० में आर्थिक सुधारों के अन्तर्गत निजीकरण की नीति अपनायी।

**81. वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर-वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं का समन्वय या एकीकरण किया जाता है ताकि वस्तुओं एवं सेवाओं, प्रौद्योगिकी, पूँजी और श्रम या मानवीय पूँजी का भी निर्बाध प्रवाह हो।

**82. स्वयं सहायता समूह से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- स्वयं सहायता समूह 15-20 सदस्यों (खासकर महिलाओं) का अनौपचारिक समूह है जिनकी समान आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि होती है। ये अपने बचत को जोड़कर एक कोष तैयार करते हैं। इस कोष से सदस्यों को व्यवसाय या पारिवारिक जरूरतों के लिए ऋण प्रदान करते हैं। इससे संसाधन का सही उपयोग होता है।

**83. आधारभूत संरचना किसे कहते हैं?**

उत्तर-आधारभूत संरचना से हमारा अभिप्राय यातायात एवं संचार, शक्ति, सिंचाई शिक्षा, स्वास्थ्य, जलापूर्ति आदि जैसी सेवाओं से है जो किसी अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए एक सहायक ढाँचे का निर्माण करती है।

**84. बाह्य-स्रोतीकरण किसे कहते हैं?**

उत्तर-बाह्य-स्रोतीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें कोई देश अपने देश के रोजगार को बाहर स्थानांतरित करके कार्य को संपन्न कराता है जैसे- कॉलसेंटर जो भारत में स्थित होकर भी अमेरिकी कंपनियों का कार्य कर रहा है। विश्व में बाह्य-स्रोतीकरण का सबसे ज्यादा लाभ भारत एवं चीन को मिला है जहाँ पर श्रमशक्ति अपेक्षाकृत सस्ती है।

**85. उदारीकरण से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- उदारीकरण का अर्थ है सरकार द्वारा बनाई गई आर्थिक नीतियों में विशेष छूट प्रदान करना। इसके अंतर्गत सभी अनावश्यक नियंत्रणों एवं प्रतिबंधों जैसे परमिट, कोटा लाइसेंस आदि से अर्थव्यवस्था की मुक्ति।

**86. उपभोक्ताओं के शोषण के कौन-कौन से तरीके हैं?**

उत्तर- भारत में उपभोक्ताओं का शोषण निम्न प्रकार से किया जाता है-

- (i) माप-तौल में कमी
- (ii) उचित मूल्य से ज्यादा कीमत लेना
- (iii) निम्न स्तर के वस्तुओं का विक्रय
- (iv) वस्तुओं की कालाबाजारी

**87. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 क्या है?**

उत्तर- उपभोक्ता के अधिकारों की रक्षा के लिए बनाया गया एक कानून है जो सन् 1986 में लागू किया गया था। इसके अंतर्गत धारा 6 में उपभोक्ताओं को निम्न अधिकार प्रदान किए गए हैं-

- (i) सुरक्षा का अधिकार,
- (ii) सूचना पाने का अधिकार,
- (iii) चुनने तथा पसंद करने का अधिकार,
- (iv) सुनवाई का अधिकार,
- (v) शिकायत निवारण या क्षतिपूर्ति का अधिकार तथा
- (vi) उपभोक्ता-शिक्षा का अधिकार।

**88. बहुराष्ट्रीय कम्पनी किसे कहते हैं?**

उत्तर-वैसी कम्पनियाँ जो एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियंत्रण एवं स्वामित्व रखती हैं तथा विश्व स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन कर उत्पादनों को एक दूसरे से जोड़ती हैं, बहुराष्ट्रीय कम्पनी कहलाती है। जैसे-- टाटा मोटर्स आदि ।

**89. संसाधन को परिभाषित कीजिए।**

उत्तर-हमारे पर्यावरण में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु जो हमारी जरूरतों को पूरा कर सकती है, संसाधन कहलाती है। शर्त यह है कि वस्तु तकनीकी रूप से सुगम, आर्थिक रूप से उपयोगी तथा सांस्कृतिक रूप से मान्य हो। जैसे-भूमि, मृदा, जल, खनिज, जीव इत्यादि।

**90. प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण क्यों आवश्यक है?**

उत्तर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है क्योंकि ये हमारे लिए बहुमूल्य हैं एवं समाप्त योग्य हैं। इनके निर्माण में लाखों वर्षों का समय लगता है। इसके साथ ही इसे अगली पीढ़ी के लिए भी बचाकर रखना आवश्यक है।

**91. क्योटो सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?**

उत्तर-क्योटो सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य कानूनी तौर पर विश्व के सभी राष्ट्रों के मध्य एक समझौता करना था, जिससे सभी सदस्य राष्ट्र जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी ग्लोबल वार्मिंग से निपटने तथा ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए प्रतिबद्ध हुए।

**92. मृदु जल क्या होता है?**

उत्तर- मृदु जल पीने योग्य मीठा जल होता है। इसमें लवण नहीं होता है तथा इसमें साबुन के साथ आसानी से झाग पैदा हो जाता है।

**93. जल संसाधन के क्या उपयोग हैं?**

उत्तर-जल एक बहुमूल्य संसाधन है, जिसका उपयोग मानव प्राचीन समय से ही करता आ रहा है। प्राचीन काल से ही मानव द्वारा पेयजल, घरेलू कार्य, सिंचाई, मल-मूत्र विसर्जन आदि कार्यों में जल का उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में जल का सर्वाधिक उपयोग सिंचाई, विद्युत उत्पादन एवं उद्योगों में किया जा रहा है।

**94. भारत की नदियों के प्रदूषण के कारणों का वर्णन कीजिए।**

उत्तर- भारत में प्रायः नगर एवं कल-कारखाने नदियों के किनारे अवस्थित हैं। इन नगरों के गंदे जल और कल कारखानों के कचड़ों को प्रायः नदियों में ही गिरा दिया जाता है। साथ ही कृषि में उपयोग किए जाने वाले रसायनों उर्वरकों, कीटनाशकों के जल में मिल जाने के कारण भी नदियों का जल प्रदूषित हुआ है।

**95. भारत के किन भागों में नदी डेल्टा का विकास हुआ है?**

उत्तर-नदियों के मुहाने पर उनके द्वारा लाई गई गाद के जमा होने से बना क्षेत्र जिसका आकार साधारण तौर पर त्रिकोणीय होता है, डेल्टा कहलाता है। भारत के पूर्वी भाग में गंगा-ब्रह्मपुत्र तथा महानदी, दक्षिण-पूर्वी भाग में गोदावरी तथा दक्षिण में कृष्णा एवं कावेरी नदियों द्वारा डेल्टा का विकास हुआ है। जलोढ़ मिट्टी होने के कारण इन डेल्टाओं की भूमि काफी उपजाऊ है

**96. वन्य जीवों के हास के लिए उत्तरदायी चार प्रमुख कारकों का उल्लेख करें।**

उत्तर-वन्य जीवों के हास के निम्न चार प्रमुख कारक हैं

(i) वन्य प्रदेश के कटने के कारण वन्य जीवों का आवास कम होता जाना।

(ii) वन्य जीवों का लगातार शिकार किया जाना।

(iii) कृषि में अनेक रसायनों के प्रयोग ने भी कई वन्य प्राणियों के अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न कर दिया है।

(iv) प्रदूषण के कारण भी वन एवं वन्य प्राणियों का हास हुआ है।

**97. चिपको आंदोलन का वर्णन करें।**

उत्तर-सुन्दर लाल बहुगुणा के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के टेहरी-गढ़वाल पर्वतीय जिलों में अनपढ़ जनजातियों द्वारा सन् 1972 ई० में यह आन्दोलन चलाया गया था। इस आन्दोलन में स्थानीय लोग हरे-भरे पेड़-पौधों को कटने से बचाने के लिए अपने आगोश में घेर कर इसकी रक्षा करते थे।

**98. मैंगनीज के उपयोग पर प्रकाश डालें।**

उत्तर- मैंगनीज एक उपयोगी खनिज पदार्थ है। इसका उपयोग इस्पात निर्माण, मिश्रधातु निर्माण, सूखा-सेल बनाने में, चमड़ा एवं माचिस उद्योग, ब्लीचिंग पाउडर, पेंट, दवा बनाने में होता है।

**99. झारखण्ड के दो कोयला क्षेत्रों के नाम लिखिए।**

उत्तर-झारखण्ड राज्य के प्रमुख कोयला क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

(A) झरिया, (ii) बोकारो, (iii) गिरीडीह, (iv) कर्णपुरा तथा (v) रामगढ़।

**100. दो अधात्विक खनिजों के नाम लिखिए।**

उत्तर-वैसे खनिज जिनमें धातु अंश का अभाव होता है और भंगुर प्रकृति के होते हैं, अधात्विक खनिज कहलाते हैं। इन पर चोट मारने पर ये टूट जाते हैं। डोलामाइट, हीरा, अभ्रक, चूना पत्थर इत्यादि इसी के उदाहरण हैं। इनमें लाइमस्टोन का सर्वाधिक औद्योगिक महत्त्व है।

**101. खनिजों की विशेषताएँ बताइए।**

उत्तर-खनिज सभ्यता संस्कृति के आधारस्तंभ हैं। इनके बगैर उद्योगों का विकास नहीं किया जा सकता है। चट्टानों के निर्माण में इनकी भूमिका होती है। 2000 से भी अधिक खनिजों की पहचान हो चुकी है पर इनमें 30 खनिज का आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्त्व है। धातु की उपलब्धता के आधार पर खनिज दो प्रकार के होते हैं।

**102. पर्यावरण के लिए वन क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?**

उत्तर-वन प्रकृति का अनुपम उपहार है, जिसके आँचल में मानव आदिकाल से पोषित होता रहा है। वन जलवायु का सच्चा मानक है। एक तरफ वन की भूमि जल का अवशोषण कर बाढ़ के खतरे को रोकती है तो दूसरी तरफ अच्छी वर्षा भी कराती है। यह वन्य प्राणियों को भी आश्रय प्रदान करती है तथा वन्य प्राणियों के साथ ही मानव को भी अनेक आवश्यक जीवनदायिनी वस्तुएँ देती हैं। जीव मंडल में जीवों और जलवायु को संतुलित स्थिति प्रदान कर संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान देता है

**103. पेट्रोलियम से किन-किन वस्तुओं का निर्माण होता है?**

उत्तर-पेट्रोलियम एक शक्ति संसाधन है, जिसका हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। इसका मुख्य उपयोग यातायात के साधनों में ईंधन के रूप में है। इसके अलावा औद्योगिक मशीनों में स्नेहक के रूप में होता है। पेट्रोलियम का उपयोग संश्लेषित वस्त्र, उर्वरक, रसायन उद्योग, कीटनाशक दवा एवं कृत्रिम रबर बनाने में भी किया जाता है।

**104. परंपरागत और गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोतों में अंतर बताइए।**

उत्तर-परंपरागत ऊर्जा के स्रोत समाप्त हो जाने वाले शक्ति के साधन हैं और अनवीकरणीय हैं। इसलिए इनका उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस इसके उदाहरण हैं।



**105. कोयले के विभिन्न प्रकारों के नाम लिखिए।**

उत्तर-कोयला चार प्रकार का होता है- (i) एंथ्रासाइट, (ii) बिटुमिनस, (iii) लिग्नाइट कोयला तथा (iv) पीट। सबसे अच्छा कोयला एंथ्रासाइट है।

**106. खनिजों के संरक्षण एवं प्रबंधन से क्या समझते हैं? अथवा, खनिजों के संरक्षण के उपाय सुझाइये?**

उत्तर - खनिज पदार्थ अशुद्ध अवस्था में खदानों से प्राप्त होते हैं। खनिजों का भंडार सीमित है। अतः अशुद्ध खनिजों का शुद्धीकरण खनिज प्रबंधन कहलाता है। सीमित खनिज भंडारों का योजनाबद्ध तरीके से पीढ़ी दर पीढ़ी उपयोग खनिजों का संरक्षण कहलाता है। 15. सौर ऊर्जा का उत्पादन कैसे होता है?

**107. सौर ऊर्जा का उत्पादन कैसे होता है**

उत्तर - सौर ऊर्जा का उत्पादन सूर्य प्रकाश से होता है। सौर प्लेट पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तब रासायनिक ऊर्जा बैटरी में संग्रहित की जाती है। बैटरी की ऊर्जा से घरों को ऊर्जा मिलती है।

**108. रबी और खरीफ फसल में अंतर स्पष्ट करें।**

उत्तर- रबी फसल की बुआई अक्टूबर-नवम्बर में की जाती है तथा अप्रैल-मई में काट ली जाती है। इसके अंतर्गत गेहूँ, चना-मटर, सरसों आदि मुख्य फसलें हैं। खरीफ की बुआई जून-जुलाई में की जाती है एवं सितंबर-अक्टूबर में काट ली जाती है। इसके अंतर्गत धान, मूँगफली, जूट, कपास आदि मुख्य फसल हैं।

**109. नकदी फसल और रोपण फसल में क्या अंतर है?**

उत्तर-नगदी फसल-छोटे या बड़े आकार के भूखंड पर अधिक से अधिक मुद्रा की प्राप्ति के उद्देश्य से इस प्रकार के फसल उगाए जाते हैं। जैसे तंबाकू, मसाला आदि।

रोपण फसल-रोपण कृषि भी एक प्रकार की व्यापारिक कृषि ही है।

इस कृषि में उद्योग की तरह ही मैनेजर एवं मजदूर की व्यवस्था होती है और मिल मालिक की तरह इसमें कृषक की स्थिति होती है। ऐसी कृषि बड़े-बड़े फार्मों में यंत्रों एवं अन्य आधुनिक तकनीक से की जाती है।

**110. बिहार में कृषि की निम्न उत्पादकता के दो कारण बताइए।**

उत्तर-बिहार कृषि सम्बन्धी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, जिसमें से निम्नलिखित हैं-

(1) खेतों का छोटा आकार- बिहार में खेतों का आकार छोटा होने के कारण वैज्ञानिक पद्धति से खेती सम्भव नहीं है।

(ii) सिंचाई की समस्या- बिहार की कृषि मानसून पर निर्भर है। यहाँ सकल की गई भूमि के मात्र 46 प्रतिशत पर ही सिंचाई हो पाती है, शेष सिंचाई से वंचित है।

**111. वन के पर्यावरणीय महत्त्व का वर्णन कीजिए।**

उत्तर - पर्यावरण की गुणवत्ता को बढ़ाने में वनों का योगदान इस प्रकार

(i) वन स्थानीय जलवायु को मृदुल बनाने में सहायक है।

(ii) मृदा अपरदन को नियंत्रित करने तथा मिट्टी को उपजाऊ बनाने में सहायक है।

(iii) नदी प्रवाह को नियमित करके बाढ़ों की विभीषिका को कम करता है।

(iv) वन तेज पवन की शक्ति को कम करता है और मरुस्थल का विस्तार रोकता है।

(v) वन पर्यावरण में स्थिरता बनाए रखते हैं तथा पारिस्थितिकी संतुलन को बिगड़ने नहीं देती है

**112. फसल चक्रण मृदा संरक्षण में किस प्रकार सहायक है?**

उत्तर- मृदा के कटाव और उसके बहाव की प्रक्रिया को मृदा अपरदन कहा जाता है। मृदा के बनने और अपरदन की क्रियाएँ आमतौर पर साथ-साथ चलती हैं और दोनों में संतुलन होता है। मृदा संरक्षण के विविध तरीके हो सकते हैं जो मानवीय क्रिया-कलाप द्वारा अनुप्रयोग में लाए जा सकते हैं। फसल चक्रण द्वारा मृदा के पोषणीय स्तर को बरकरार रखा जा सकता है। गेहूँ, कपास, मक्का, आलू आदि के लगातार उगने से मृदा में हास उत्पन्न होता है। इसे तेलहन-दलहन पौधे की खेती के द्वारा पुनः प्राप्त किया जा सकता है। अतः फसल चक्रण मृदा संरक्षण में सहायक सिद्ध होता है।

**113. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- भारतीय कृषियों में क्रांतिकारी विकास को हरित क्रांति कहते हैं। नई प्रजायितों की फसल लगाकर, सिंचाई सुविधाओं, आधुनिक उपकरणों के प्रयोग एवं रासायनिक खाद उर्वरकों के प्रयोग से भारतीय कृषि में सोना उत्पादन होने लगा है। भारतीय कृषि अब सहारा नहीं बल्कि व्यवसाय बन गई है। कृषि में आई इस अमूल-चूल उत्थान को हरित क्रांति के नाम से जाना जाता है

**114. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को उदाहरण सहित वर्गीकृत कीजिए ।**

उत्तर-स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को चार भागों में बांटा जा सकता

(i) सार्वजनिक उद्योग-सार्वजनिक उद्योग सरकारी एजेंसियों द्वारा प्रबंधित तथा सरकार द्वारा संचालित होते हैं। BHEL तथा SAIL इसी प्रकार के उद्योग हैं-

(ii) निजी उद्योग-निजी उद्योग का स्वामित्व किसी एक व्यक्ति अथवा समूह के हाथ में होता है। टिस्को तथा बजाज ऑटो लिमिटेड निजी उद्योगों के उदाहरण हैं।

(iii) संयुक्त उद्योग-वे उद्योग जो राज्य सरकार तथा निजी क्षेत्र के संयुक्त प्रयास से चलाये जाते हैं, उन्हें संयुक्त उद्योग कहा जाता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड (OIL) एक ऐसा ही उद्योग है।

(iv) सहकारी उद्योग-वे उद्योग जिनका स्वामित्व कच्चे माल की पूर्ति करने वाले उत्पादकों, श्रमिकों या दोनों के हाथों में होता है, सहकारी उद्योग कहलाते हैं। महाराष्ट्र की चीनी मिलें तथा केरल के नारियल पर आधारित उद्योग इसके उदाहरण हैं।

**115. समोच्च रेखाओं द्वारा शंकवाकर पहाड़ी का प्रदर्शन किस प्रकार किया जाता है?**

उत्तर-शंकवाकार पहाड़ी का प्रदर्शन वृत्ताकार या बन्द रेखाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। पहाड़ी के शिखर की ऊँचाई मध्य में बिन्दु या त्रिकोण बना कर किया जाता है। ऊँचाई प्रकट करने वाली रेखाएँ अन्दर तथा निचाई प्रकट करने वाली रेखाएँ बाहर होती हैं।

**116. कृषि आधारित उद्योग और खनिज आधारित उद्योग में अन्तर स्पष्ट करें।**

उत्तर - कृषि आधारित उद्योग कृषि उत्पाद से सम्बन्धित होते हैं। खनिज आधारित उद्योग खनिज सम्पदा से सम्बन्धित होते हैं। उर्वरक संयंत्र, आटा उद्योग, कपास उद्योग कृषि आधारित हैं जबकि सिमेंट उद्योग, इस्पात उद्योग खनिज आधारित उद्योग हैं।

**117. बिहार में कृषि की निम्न उत्पादकता के दो कारण बताइए।**

उत्तर-बिहार कृषि सम्बन्धी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है, जिसमें से निम्नलिखित हैं-

(1) खेतों का छोटा आकार- बिहार में खेतों का आकार छोटा होने के कारण वैज्ञानिक पद्धति से खेती सम्भव नहीं है।

(ii) सिंचाई की समस्या- बिहार की कृषि मानसून पर निर्भर है। यहाँ सकल की गई भूमि के मात्र 46 प्रतिशत पर ही सिंचाई हो पाती है, शेष सिंचाई से वंचित है।

**118. भूकम्प और सुनामी के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर – (i) भूकम्प (Earthquake) – भूकम्प का सरल अर्थ भूमि का कंपायमान होना है। भूकम्प एक भूगर्भीय प्रक्रिया है जिसकी तीव्रता कभी-कभी अत्यन्त भयानक होती है उससे जान-माल की अपार क्षति होती है। यह पृथ्वी के गर्भ में संचित अपार ऊर्जा के मुक्त होने से उत्पन्न होती है जो भूकम्पीय तरंगें कहलाती हैं।

(ii) सुनामी (Tsunami) – सुनामी एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें महासागर का पानी भूकम्प के आने के कारण बड़े स्तर पर तितर-वितर होता है। इसके फलस्वरूप लहरों की एक श्रृंखला उत्पन्न होती है। अर्थात् पृथ्वी के गर्भ में संचित अपार ऊर्जा के मुक्त होने से लहरें उत्पन्न होती हैं, जो भूकम्पीय तरंगें कहलाती हैं। इस कंपन का केन्द्र जब महासागर की तली पर होता है तब वह सुनामी के नाम से जाना जाता है।

**119. भूकम्प क्या है? इससे बचाव के किन्हीं तीन उपायों का उल्लेख करें।**

उत्तर-धरती में उत्पन्न ऊर्जा तरंगें चट्टानों में कम्पन उत्पन्न करती हैं। कम्पन का केन्द्र जब स्थल खण्ड होता है तो उसे भूकम्प (earth quake) कहते हैं। भूकम्प एक प्राकृतिक आपदा है। इसमें जानमाल दोनों की क्षति होती है। भारत में दरभंगा (बिहार) एवं लातूर (महाराष्ट्र), भूज (गुजरात) में भयंकर भूकम्प आए थे। भूकम्प से बचाव के दो उदाहरण इस प्रकार हैं- (i) भूकम्परोधी भवन निर्माण कर, (ii) भूकम्प के पूर्वानुमान पर सक्रियता प्रदर्शन द्वारा। (iii) भूकम्प के समय आपदा से बचाव के तरीकों का इस्तेमाल कर।

**120. आपदा से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- बहुत ही कम समय में अकस्मात घटनेवाली ऐसी दुर्घटनाएँ जिनका तत्काल प्रभाव पर्यावरण, प्राकृतिक संपदा, मानव जीवन एवं संपत्ति पर पड़े तथा जिससे जान-माल की अपार क्षति हो, आपदा कहलाती है। आपदाएँ अल्पकालीन होती हैं अर्थात् कम समय में ही संपादित हो जाती हैं। परन्तु इसके दुष्परिणाम दीर्घकालिक होते हैं।

**121. आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की भूमिका का वर्णन करें।**

उत्तर- आपदा के प्रभाव को कम करने में जो तात्कालिक कार्य किये जाते हैं, उसे आकस्मिक प्रबंधन कहते हैं।

आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। राहत शिविर का निर्माण, प्राथमिक उपचार की सामग्री की व्यवस्था, एम्बुलेंस, डॉक्टर, अग्निशामक इत्यादि की तत्काल व्यवस्था करना इसका मुख्य कार्य है। इस प्रकार ये आपदा प्रबंधन को सरल तथा सहज बना सकते हैं

**122. प्राकृतिक आपदा और मानव जनित आपदा में क्या अंतर है?**

उत्तर- प्रकृति में परिवर्तन के फलस्वरूप जो आपदा आती है उसे प्राकृतिक आपदा कहते हैं। इसके अंतर्गत, भूकम्प, बाढ़, सूनामी, भूस्खलन आदि आते हैं। मानवीय क्रियाकलापों के परिणामस्वरूप उत्पन्न आपदा को मानव जनित आपदा कहते हैं। इसके अंतर्गत दुर्घटनाएँ, महामारी, दंगे आदि आते हैं।

**123. सुनामी के विनाशकारी प्रभाव को कम करने के उपाय बताइए।**

उत्तर- सुनामी के विनाशकारी प्रभाव को कम करने के निम्न उपाय हैं-

- (i) समुद्र तटीय क्षेत्रों में मैंग्रोव वनस्पति को लगाना चाहिए।
- (ii) समुद्र तटीय क्षेत्र में कंक्रीट के तटबंध बनाना चाहिए।
- (iii) समुद्री क्षेत्रों के समीप रहने वाले लोगों को प्रशिक्षित करना चाहिए।
- (iv) समुद्र तटीय क्षेत्रों में सुनामी का पूर्वानुमान यंत्र के सहारे पहले ही सूचित किया जाना चाहिए।

**124. सुदूर संवेदी उपग्रह क्या है?**

उत्तर- सुदूर संवेदी उपग्रह, अंतरिक्ष में प्रस्थापित एक उपग्रह है। संचार की यह विधि सर्वाधिक विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक है। इसका उपयोग दूरदर्शन, मौसम विज्ञान के अलावा आपदा संबंधी चेतावनी में किया जाता है।

**125. आपदा प्रबंधन क्यों आवश्यक है?**

उत्तर- आपदा से जन-धन एवं संसाधनों की अपार क्षति होती है। अतः आपदा के पूर्व एवं पश्चात् होने वाली क्षति को कम करने या बचने के लिए आपदा प्रबंधन की आवश्यकता पड़ती है।

**126. 'बिहार का शोक' किसे और क्यों कहा जाता है?**

उत्तर- बिहार का शोक कोसी नदी को कहा जाता है। कोसी नदी में प्रत्येक वर्ष भयानक बाढ़ आती है, जिससे उत्तरी बिहार में अपार जान-माल की क्षति होती है।

**127. उपग्रह संचार से क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- उपग्रह संचार का अर्थ है ऐसी संचार प्रणालियाँ जिनका उपयोग पृथ्वी पर रह रहे लोगों द्वारा किया जा सके। इसके लिए पृथ्वी की कक्षा में कोई एक उपग्रह स्थापित किया जाता है। संचार उपग्रह निश्चित तौर पर अंतरिक्ष में स्थापित रेडियो रिलेस्टेशन ही है।

**दीर्घ उत्तरीय प्रश्न**

**1. राष्ट्रवाद के उदय के कारणों एवं परिणामों की चर्चा करें।**

उत्तर-कारण-यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना को 1789 की फ्रांसीसी क्रांति तथा नेपोलियन की विजयों ने बढ़ावा दिया। फ्रांसीसी क्रांति ने कुलीन वर्ग के हाथों से राजनीति को सर्वसाधारण एवं मध्यमवर्ग तक पहुँचा दिया। नेपोलियन ने विजित राज्यों में राष्ट्रवादी भावना जागृत कर दी। साथ ही नेपोलियन के युद्धों और विजयों से अनेक राष्ट्रों में फ्रांसीसी आधिपत्य के विरुद्ध आक्रोश पनपा, जिससे राष्ट्रवाद का विकास हुआ।

परिणाम-18वीं एवं 19वीं शताब्दियों में यूरोप में जिस राष्ट्रवाद की लहर चली, उसके व्यापक और दूरगामी परिणाम यूरोप और विश्व पर पड़े जो निम्नलिखित थे-

- (i) राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अनेक राष्ट्रों में क्रांतियाँ और आंदोलन हुए। इनके फलस्वरूप अनेक नए राष्ट्रों का उदय हुआ, जैसे इटली और जर्मनी के एकीकृत राष्ट्र।
- (ii) यूरोपीय राष्ट्रवाद के विकास का प्रभाव एशिया और अफ्रीका में भी पड़ा। यूरोपीय उपनिवेशों के आधिपत्य के विरुद्ध वहाँ भी औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के लिए राष्ट्रीय आंदोलन आरंभ हो गए।
- (iii) राष्ट्रवाद के विकास ने प्रतिक्रियावादी शक्तियों और निरंकुश शासकों का प्रभाव कमजोर कर दिया।
- (iv) भारतीय राष्ट्रवाद भी यूरोपीय राष्ट्रवाद से प्रभावित हुआ।
- (v) राष्ट्रवादी प्रवृत्ति ने साम्राज्यवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया। इसने अंततः प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

## 2. 1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के क्या कारण थे?

उत्तर-1830 की क्रांति के बाद लुई फिलिप फ्रांस का राजा बना। उसने अपने विरोधियों को खुश करने के लिए 'स्वर्णिम मध्यमवर्गीय नीति' अवलंबन करते हुए सन् 1840 में गीजों को प्रधानमंत्री नियुक्त किया, जो कट्टर प्रतिक्रियावादी था। वह किसी भी तरह के वैधानिक, सामाजिक और आर्थिक सुधारों के विरुद्ध था। फिलिप के पास कोई सुधारात्मक कार्यक्रम नहीं था और न ही उसे विदेश नीति में कोई सफलता हासिल हो रही थी। उसके शासनकाल में देश में भुखमरी एवं बेरोजगारी व्याप्त हो गई। सुधारवादियों ने 22 फरवरी, 1848 ई० को पेरिस में थियर्स के नेतृत्व में एक विशाल भोज का आयोजन किया। राजा ने इस पर रोक लगा दी। अतः पेरिस में विरोध प्रदर्शन हुए और जुलूस निकाले गए। इस पर पुलिस ने गोली चला दी। जिसमें अनेक लोग मारे गए। अतः दमनकारी नीति अपनाए जाने के कारण 1848 ई० की क्रांति आरंभ हो गई।

## 3. इटली के एकीकरण में मेजिनी, कावूर और गैरीबाल्डी के योगदानों को बतायें।

उत्तर-इटली के एकीकरण में मेजिनी, कावूर और गैरीबाल्डी का महत्वपूर्ण योगदान था जिसकी विवेचना निम्न शीर्षकों के अंतर्गत की जा सकती है :

इटली के एकीकरण में **मेजिनी**-मेजिनी को इटली के एकीकरण का पैगम्बर कहा जाता है। वह दार्शनिक, लेखक, राजनेता, गणतंत्र का समर्थक एवं एक कर्मठ कार्यकर्ता था। राष्ट्रवादी भावना से प्रेरित होकर उसने गुप्त क्रांतिकारी संगठन कार्बोनारी की सदस्यता ग्रहण की। अपने गणतंत्रवादी उद्देश्यों के प्रचार के लिए मेजिनी ने 1831 में मार्सेई में 'यंग इटली' तथा 1834 में बर्न में 'यंग यूरोप' की स्थापना की। इसका सदस्य युवाओं को बनाया गया। मेजिनी जन संप्रभुता के सिद्धांत में विश्वास

रखता था। उसने 'जनार्दन जनता तथा इटली' का नारा दिया। उसका उद्देश्य ऑस्ट्रिया के प्रभाव से इटली को मुक्त करवाना तथा संपूर्ण इटली का एकीकरण करना था।

**इटली के एकीकरण में काबूर का योगदान**-काबूर का मानना था कि सार्डिनिया के नेतृत्व में ही इटली का एकीकरण संभव था। अतः इसके लिए उसने प्रयास आरंभ कर दिए। विक्टर एमैनुएल के प्रधानमंत्री के रूप में उसने इटली की आर्थिक और सैनिक शक्ति सुदृढ़ की। पेरिस शांति सम्मेलन में उसने इटली की समस्या को यूरोप का प्रश्न बना दिया। 1859 में फ्रांस की सहायता से ऑस्ट्रिया को पराजित कर उसने लोम्बार्डी पर अधिकार कर लिया। मध्य इटली स्थित अनेक राज्यों को भी सार्डिनिया में मिला लिया गया।

**इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी का योगदान** - उसका मानना था कि युद्ध के बिना इटली का एकीकरण नहीं होगा। इसलिए, उसने आक्रामक नीति अपनाई। 'लालकुर्ती' और स्थानीय किसानों की सहायता से उसने सिसली और नेपल्स पर अधिकार कर लिया। इन्हें सार्डिनिया में मिला लिया गया। वह पोप के राज्य पर भी आक्रमण करना चाहता था, परंतु काबूर ने इसकी अनुमति नहीं दी।

#### 4. जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर-फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ की मृत्यु के बाद प्रशा का राजा विलियम प्रथम बना। वह राष्ट्रवादी था तथा प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण करना चाहता था। विलियम जानता था कि ऑस्ट्रिया और फ्रांस को पराजित किए बिना जर्मनी का एकीकरण संभव नहीं है। अतः उसने 1862 ई० में ऑटोवॉन बिस्मार्क को अपना चांसलर (प्रधानमंत्री) नियुक्त किया। बिस्मार्क प्रख्यात राष्ट्रवादी और कूटनीतिज्ञ था। जर्मनी के एकीकरण के लिए वह किसी भी कदम को अनुचित नहीं मानता था। उसने जर्मन राष्ट्रवादियों के सभी समूहों से संपर्क स्थापित कर उन्हें अपना प्रभाव में लाने का प्रयास किया। बिस्मार्क का मानना था कि जर्मनी की समस्या का समाधान बौद्धिक भाषणों से नहीं, आदर्शवाद से नहीं बल्कि प्रशा के नेतृत्व में रक्त और लौह की नीति से होगा। 1871 ई० में फ्रैंकफर्ट की संधि द्वारा दक्षिणी राज्य उत्तरी जर्मन महासंघ में मिल गए। अंततोगत्वा जर्मनी 1871 ई० में एक एकीकृत राष्ट्र के रूप में यूरोप के मानचित्र पर उभरकर सामने आया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की भूमिका काफी महत्वपूर्ण थी।



**5. भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।**

उत्तर- भारतीय संविधान की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i) लिखित एवं विशाल संविधान- भारत का संविधान लिखित एवं विश्व का सबसे बड़ा संविधान है। इसमें 450 (444) के आसपास अनुच्छेद, 22 भाग एवं 12 अनुसूचियाँ हैं। इसकी विशालता का अंदाजा दूसरे देशों के संविधान से तुलना करने पर लगता है, जैसे- संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान में 7 तथा चीन के संविधान में 106 अनुच्छेद ही हैं।

(ii) कठोर एवं लचीलापन- भारतीय संविधान की एक अन्य विशेषता है- कठोरता एवं लचीलापन का अद्भुत मेल। यह न तो अमेरिका के संविधान की तरह कठोर है और न ही ब्रिटेन के संविधान की तरह लचीला। संविधान के कुछ अनुच्छेदों को संशोधन द्वारा समय-समय पर और लचीला बनाया गया है तथा बनाया भी जा सकता है, जैसे- नये राज्यों का निर्माण, राज्यों में विधान परिषद् की स्थापना, या समाप्ति लचीलापन का ही उदाहरण है। दूसरा अनुच्छेद है जिनमें संशोधन की प्रक्रिया जटिल है

(iii) संघात्मक और एकात्मक शासन का समन्वय- भारतीय शासन की अन्य व्यवस्था संघात्मक लक्षण है, जैसे- केन्द्र व राज्यों में शक्ति बँटवारा, लिखित कठोर और सर्वोच्च संविधान, स्वतंत्रता तथा सर्वोच्च न्यायपालिका, जो संविधान की रक्षा और व्यवस्था कर सके।

(iv) संसदीय प्रणाली- भारतीय संविधान की एक अन्य विशेषता संसदीय प्रणाली भी है। संसदीय व्यवस्था में कार्यपालिका का अध्यक्ष नाममात्र का होता है और वास्तविक शक्तियाँ मंत्रिमंडल के पास होती हैं तथा मंत्रिमंडल का अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं। भारत में राष्ट्रपति का निर्वाचन जनप्रतिनिधियों द्वारा होता है।

(v) मौलिक अधिकार- यह भी भारतीय संविधान की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। मौलिक अधिकार व्यक्ति के विकास के लिए दिए जाते हैं और इनके माध्यम से सरकार की शक्तियों को सीमित किया जाता है। अमेरिका के समान भारतीय संविधान में नागरिकों को निम्नलिखित छह मौलिक अधिकार दिए गए हैं- (क) समानता का अधिकार, (ख) स्वतंत्रता का अधिकार, (ग) शोषण के विरुद्ध अधिकार, (घ) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, (ङ) संस्कृति एवं शिक्षा का अधिकार, (च) संविधानिक उपचार का अधिकार।

(vi) नीति निर्देशक तत्त्व- भारत में सामाजिक व आर्थिक न्याय की स्थापना के लिए संविधान के भाग iv में अनुच्छेद 36 से 51 तक में नीति निर्देशक तत्त्व का वर्णन है। ये नागरिकों के अधिकार नहीं हैं और न इन्हें न्यायालय द्वारा लागू किया जा सकता है।

(vii) वयस्क मताधिकार- यह भी संविधान की महत्वपूर्ण विशेषता है। विश्व के अन्य किसी देश में वयस्क मताधिकार एक साथ नहीं दिया गया है। यहाँ तक कि इंगलैंड व स्विट्जरलैंड जैसे देशों में यह अधिकार बहुत बाद में दिया गया। वयस्क मताधिकार का अर्थ है- 18 वर्ष या इससे अधिक आयु वाले सभी नागरिकों को मत देने का अधिकार। भारतीय संविधान की उपर्युक्त विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए एक ऐसा संविधान तैयार किया है, जो भारत को लोकहितकारी तथा धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाता है

#### **6. ग्राम कचहरी की संरचना एवं कार्यों का वर्णन करें।**

उत्तर-बिहार में प्रत्येक ग्राम पंचायत में न्यायिक कार्यों को निपटाने के लिए ग्राम कचहरी की स्थापना की गई है। ग्राम कचहरी में एक सरपंच होता है, जो ग्राम पंचायत के वयस्क मतदाता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होता है और ग्राम पंचायत में प्रत्येक 500 की आबादी पर एक पंच का निर्वाचन वयस्क मतदाता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से होता है। सरपंच एवं पंच की चुनाव में भी आरक्षण की व्यवस्था की गई है। यह आरक्षण व्यवस्था ग्राम पंचायत के सदस्यों के लिए निर्धारित आरक्षण व्यवस्था के अनुसार होता है। प्रत्येक कचहरी का कार्यकाल अपनी प्रथम बैठक से 5 वर्षों के लिए होता है। इस तरह सरपंच एवं पंचों का कार्य अवधि ग्राम कचहरी के कार्यकाल तक होता है। इसमें पहले सरपंच या पंच स्वयं स्वेच्छा से जिला पंचायती राज पदाधिकारी को आवेदन देकर पद त्याग कर सकता है या उसे अविश्वास प्रस्ताव के द्वारा हटाया भी जा सकता है।

ग्राम कचहरी की दीवानी एवं फौजदारी दोनों क्षेत्रों में अधिकार प्राप्त है। दस हजार रुपये तक के दीवानी मुकदमें सुनने का अधिकार ग्राम कचहरी को प्राप्त है। फौजदारी मामले में ग्राम कचहरी को अधिकतम तीन माह की सजा तथा एक हजार रुपये तक जुर्माना और उसका उल्लंघन होने पर अधिकतम 15 दिनों का साधारण कारावास देने का अधिकार है। ग्राम कचहरी में एक न्याय मित्र होता है जो सरपंच के कार्यों में सहयोग देता है, जबकि न्याय सचिव ग्राम कचहरी के कागजातों को संभालता है

**7. रूसी क्रांति के कारणों की विवेचना करें।**

उत्तर- रूस की बोल्शेविक क्रान्ति अनेक कारणों का परिणाम था। ये कारण वर्षों से संचित हो रहे थे। इस क्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे-

(i) जार की निरंकुशता एवं अयोग्य शासन-जार निकोलस-II, जिसके शासनकाल में क्रांति हुई, राजा के दैवी अधिकारों में विश्वास रखता था। वह प्रजा के सुख-दुःख के प्रति पूर्णतः लापरवाह था। गलत सलाहकारों के कारण जार की स्वेच्छाचारिता बढ़ती गई और जनता की स्थिति बद से बदतर होती गई।

(ii) कृषकों की दयनीय स्थिति-रूस में जनसंख्या का बहुसंख्यक भाग कृषक ही थे, परंतु उसकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। पूँजी का अभाव तथा करों के बोझ के कारण किसानों के पास क्रांति के सिवाय कोई विकल्प नहीं था।

(iii) औद्योगिकीकरण की समस्या-रूसी औद्योगिकीकरण पश्चिमी पूँजीवादी औद्योगिकीकरण से भिन्न थी। यहाँ राष्ट्रीय पूँजी का अभाव था। अतः उद्योगों के विकास के लिए विदेशी पूँजी पर निर्भरता बढ़ गई थी। विदेशी पूँजीपति आर्थिक शोषण को बढ़ावा दे रहे थे।

(iv) रूसीकरण की नीति-रूस के अल्पसंख्यक समूह जार निकोलस द्वितीय द्वारा जारी की गई रूसीकरण की नीति से परेशान थे। इसके अनुसार जार ने देश के सभी लोगों पर रूसी भाषा, शिक्षा और संस्कृति लादने का प्रयास किया।

(v) विदेशी घटनाओं का प्रभाव-रूस की क्रांति में विदेशी घटनाओं की भूमिका भी अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। सर्वप्रथम क्रीमिया के युद्ध 1854-56 में रूस की पराजय ने उस देश में सुधारों का युग आरंभ किया। तत्पश्चात् 1904-05 के रूस-जापान युद्ध ने रूस में पहली क्रांति को जन्म दिया और अंततः प्रथम विश्वयुद्ध में बोल्शेविक क्रांति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

(vi) रूस में मार्क्सवाद का प्रभाव तथा बुद्धिजीवियों का योगदान-रूस के औद्योगिक मजदूरों पर कार्ल मार्क्स के समाजवादी विचारों का पूर्ण प्रभाव था। रूस का पहला साम्यवादी प्लेखानोव था जो रूस में जारशाही की निरंकुशता समाप्त करके साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना चाहता था। इस प्रकार मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर मजदूर एवं किसानों का संगठन रूस की क्रान्ति का एक महान कारण साबित हुआ।

### 8. सविनय अवज्ञा आंदोलन के कारणों की चर्चा करें।

उत्तर-ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ गांधीजी के नेतृत्व में 1930 ई० में शुरू किया गया सविनय अवज्ञा आंदोलन दूसरा ऐसा जन आंदोलन था जिसका सामाजिक आधार काफी विस्तृत था। सविनय अवज्ञा आंदोलन के महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित थे।

(1) साइमन कमीशन- सर जॉन साइसन की अध्यक्षता में बनाया गया 7 सदस्यीय आयोग जिसके सभी सदस्य अंग्रेज थे। भारत में साइमन कमीशन के विरोध का मुख्य कारण कमीशन में एक भी भारतीय को नहीं रखा जाना तथा भारत के स्वशासन के संबंध में निर्णय विदेशियों द्वारा किया जाना था।

(ii) नेहरू रिपोर्ट-कांग्रेस ने फरवरी, 1928 में दिल्ली में एक सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन कर ब्रिटिश सरकार से डोमिनियन स्टेट की दर्जा देने की मांग की। यद्यपि नेहरू रिपोर्ट स्वीकृत नहीं हो सका तथा सांप्रदायिकता की भावना उभरकर सामने आई। इससे निपटने के लिए गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ किया।

(iii) विश्वव्यापी आर्थिक मंदी-1929-30 की विश्व व्यापी आर्थिक मंदी से भारत भी अछुता नहीं रहा। पूरे देश का वातावरण सरकार के खिलाफ था। ऐसी स्थिति में महात्मा गांधी को सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ करने का एक उपयुक्त अवसर दिखाई दिया।

(iv) पूर्ण स्वराज्य की मांग-दिसंबर 1929 के लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की मांग की गई। 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा के साथ ही पूरे देश में उत्साह की एक नई लहर जागृत हुई।

(v) गाँधी का समझौतावादी रुख-आंदोलन आरंभ करने से पूर्व गाँधी जी ने वायसराय लॉर्ड इरविन के समक्ष अपनी 11 सूत्रीय मांग को रखा। परंतु इरविन ने मांग मानना तो दूर गांधीजी से मिलने से भी इंकार कर दिया। अतः बाध्य होकर गांधी जी ने अपना आंदोलन दांडी मार्च से आरंभ करने का निश्चय किया।

### 9. अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कैसे हुई? इसके प्रारंभिक उद्देश्य क्या थे?

उत्तर-भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत 19 वीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से माना जाता है। 1883 ई० में इंडियन एसोसिएशन के सचिव आनंद मोहन बोस ने कलकत्ता में 'नेशनल काँग्रेस' नामक अखिल भारतीय संगठन का सम्मेलन बुलाया

जिसका उद्देश्य बिखरे हुए राष्ट्रवादी शक्तियों को एकजुट करना था। परंतु, दूसरी तरफ एक अंग्रेज अधिकारी एलेन ऑक्टोवियन ह्यूम ने इस दिशा में अपने प्रयास शुरू किए और 1884 में 'भारतीय राष्ट्रीय संघ' की स्थापना की। भारतीयों को संवैधानिक मार्ग अपनाने और सरकार के लिए सुरक्षा कवच बनाने के उद्देश्य से ए०ओ०ह्यूम ने 28 दिसम्बर, 1885 को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की। इसके प्रारंभिक उद्देश्य निम्नलिखित थे-

(i) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय हित के नाम से जुड़े लोगों के संगठनों के बीच एकता की स्थापना का प्रयास।

(ii) देशवासियों के बीच मित्रता और सद्भावना का संबंध स्थापित कर धर्म, वंश, जाति या प्रांतीय विद्वेष को समाप्त करना।

(iii) राष्ट्रीय एकता के विकास एवं सुदृढ़ीकरण के लिए हर संभव प्रयास करना।

(iv) राजनीतिक तथा सामाजिक प्रश्नों पर भारत के प्रमुख नागरिकों से चर्चा SSF करना एवं उनके संबंध में प्रमाणों का लेखा तैयार करना।

(v) प्रार्थना पत्रों तथा स्मार पत्रों द्वारा वायसराय एवं उनकी काउन्सिल से सुधारों हेतु प्रयास करना। इस प्रकार कांग्रेस का प्रारंभिक उद्देश्य शासन में सिर्फ सुधार करना था।

#### 10. कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण की गति प्रदान की कैसे

उत्तर- कोयला एवं लोहा कारखानों एवं मशीनों को चलाने के लिए आवश्यक है। भारत में कोयला उद्योग 1814 से शुरू हुआ। वस्त्र उद्योग की प्रगति कोयले एवं लोहे के उद्योग पर बहुत अधिक निर्भर करती थी इसलिए अंग्रेजों ने इन उद्योगों पर अधिक ध्यान दिया। सन् 1815 में हम्फ्री डेवी ने खानों में काम करने के लिए एक 'सेफ्टी लैंप' का आविष्कार किया। हेनरी ने एक शक्तिशाली भट्टी विकसित करके लौह उद्योग को और अधिक बढ़ावा दिया। रेलवे के निर्माण से लौह उद्योग में तेजी आयी। इस तरह कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण को गति दिया।

**11. उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं? औद्योगिकीकरण ने उपनिवेशवाद को कैसे जन्म दिया?**

उत्तर-किसी शक्तिशाली साम्राज्यवादी देशों द्वारा किसी दूसरे कमजोर देशों पर अधिकार कर उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं उसके शासन प्रबंध पर नियंत्रण कर लेने की प्रक्रिया को ही उपनिवेशवाद कहते हैं।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नये-नये यंत्रों एवं मशीनों के आविष्कार ने उद्योग जगत में ऐसे क्रांति का सूत्रपात किया जिससे औद्योगिकीकरण एवं उपनिवेशवाद दोनों का मार्ग प्रशस्त हुआ। मशीनों का आविष्कार तथा कारखानों की स्थापना से उत्पादन में काफी वृद्धि हुई। इसकी खपत किसी एक देश में होना संभव नहीं था। अतः सामानों की बिक्री के लिए तथा कच्चे माल की प्राप्ति के लिए यूरोप के बड़े-बड़े देश बाजार और उपनिवेश खोजने लगे। यूरोप के नई राष्ट्रों ने अमेरिका, एशिया, अफ्रीका इत्यादि महादेशों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किए। इसी क्रम में एशिया में भारत ब्रिटेन के एक विशाल उपनिवेश के रूप में उभरा। भारत सिर्फ प्राकृतिक एवं कृत्रिम संसाधनों में ही सम्पन्न नहीं था,

**12. ग्रामीण तथा नगरीय जीवन के बीच भिन्नताओं को स्पष्ट करें।**

उत्तर-ग्रामीण तथा शहरी या नगरीय जीवन के बीच दो मूलभूत अंतर देखा जाता है। प्रथम जनसंख्या का घनत्व और दूसरा कृषि आधारित आर्थिक क्रियाओं का अनुपात। नगरों में जनसंख्या का घनत्व ग्रामीण इलाकों से अधिक होता है। गाँवों में कम लोग ही अधिक स्थानों में रहते हैं परंतु नगरों में कम स्थानों में अधिक लोग रहते हैं। इसलिए गाँव जहाँ खुलापन लिए होते हैं वहीं शहर संकुचित एवं भीड़-भाड़ वाले होते हैं। नगरों और गाँवों में दूसरा मूलभूत अंतर कृषिजन्य क्रियाकलापों से संबंधित है। ग्रामीण जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कृषि और इसके उत्पाद पर आश्रित रहता है और वही इनकी आजीविका का मुख्य साधन होता है। इसके विपरीत शहरी जनसंख्या का अधिकांश भाग गैर-कृषि व्यवसायों विशेषकर नौकरी, उद्योग तथा व्यापारिक गतिविधियों में लगी रहती है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण तथा शहरी जीवन की अर्थव्यवस्था एक-दूसरे से भिन्न होती है। शहरी अर्थव्यवस्था मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था होती है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की तुलना में अधिक गतिशील होती है

**13. 1929 ई० के आर्थिक संकट के किन्हीं तीन कारणों का संक्षिप्त विवरण दें।**

उत्तर-1929 ई० के आर्थिक संकट के कारण थे-

(i) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद खाद्यान्नों का उत्पादन आवश्यकता से अधिक हुआ जिससे कीमतें घट गई। उनका कोई खरीददार नहीं रहा।

(ii) औद्योगिक उत्पादन में भी वृद्धि हुई, परन्तु इन्हें खरीदनेवाला नहीं रहा। इससे विश्व बाजार-आधृत अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गई।

(iii) 1923 के बाद अमेरिका ने कर्ज देना बंद कर दिया था और दिए गए कर्ज की वापसी की माँग करने लगा था। इससे अमेरिकी कर्ज पर आश्रित देशों के लिए संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई।

(iv) प्रथम विश्वयुद्ध के कारण यूरोप के देश इतने बर्बाद हो गए थे कि अमेरिका से माल आयात करने की अवस्था में न थे।

(v) अमेरिका में शेयरों की कीमत में गिरावट आ गई जिससे वहाँ के लाखों कम्पनियाँ बंद हो गईं।

#### **14. नगर निगम के कार्यों का वर्णन करें।**

उत्तर- नगर निगम के निम्नांकित कार्य हैं

- (i) निगम क्षेत्र में पेशावखानों, शौचालयों, नालियों का निर्माण
- (ii) सफाई का प्रबंध
- (iii) सड़कों पर रोशनी का प्रबंध एवं चिकित्सालयों का प्रबंध
- (iv) प्राथमिक विद्यालयों, पुस्तकालयों, अजायबघरों की स्थापना एवं व्यवस्था
- (v) जन्म, मृत्यु का पंजीकरण करना
- (vi) शमशानों, बुचड़खानों एवं बाजार-हाट का प्रबंध करना
- (vii) लोगों के लिए शुद्ध पेय जल उपलब्ध कराना
- (viii) मनोरंजन गृह, पार्क, धर्मशाला एवं रैन बसेरा का प्रबंध करना
- (ix) नगर बस सेवा का प्रबंध
- (x) कल्याण केंद्रों, मातृ-केंद्रों, शिशु-केंद्रों, वृद्धाश्रमों की स्थापना एवं प्रबंध।

#### **15. ग्राम पंचायत के संगठन एवं कार्यों का वर्णन करें।**

उत्तर-ग्राम पंचायत का संगठन बिहार पंचायत राज अधिनियम 2006 के प्रावधानों के अनुसार किया जाता है। प्रत्येक पंचायत की स्थापना के लिए न्यूनतम जनसंख्या 7 हजार होना चाहिए। ग्राम पंचायतों को कई वार्डों में बाँट दिया जाता है। प्रत्येक वार्ड की न्यूनतम जनसंख्या 500 अवश्य होनी चाहिए। ग्राम पंचायत का प्रधान मुखिया होता है। ग्राम पंचायत का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है। ग्राम पंचायत निम्नलिखित कार्य करते हैं-

- (i) कृषि, बागवानी, बंजर भूमि तथा चारागाह का प्रबंध करना

- (ii) सड़क, नल, जल, पुलिया, तालाब, कुओं, सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण एवं सफाई
- (iii) वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, उचित जनवितरण प्रणाली की व्यवस्था संबंधी कार्य
- (iv) वृक्षारोपण, वनों की रक्षा तथा सामाजिक वाणिकी संबंधी कार्य
- (v) पंचायत क्षेत्र के विकास के लिए वार्षिक योजना एवं बजट तैयार करना
- (vi) ग्रामीण सांस्कृतिक कार्यों को प्रोत्साहन देना
- (vii) सार्वजनिक पार्क, खेलकूद, कूड़ादान की व्यवस्था

#### **16. भारतीय किसान यूनियन की मुख्य मांगें क्या थीं?**

उत्तर-भारतीय किसान यूनियन की निम्नलिखित मुख्य मांगें थी-

- (i) गन्ने और गेहूँ के सरकारी खरीद के लिए मूल्य में वृद्धि करना।
- (ii) कृषि सम्बन्धी उत्पादों के अन्तरराज्यीय आवागमन पर लगे रोक को हटाना।
- (iii) समुचित दर पर विद्युत आपूर्ति करना।
- (iv) किसानों के बकाये कर्ज को माफ करना तथा
- (v) किसानों के लिए पेंशन योजना लागू करना।

#### **17. गठबंधन की राजनीति किस प्रकार लोकतंत्र को प्रभावित करती है?**

उत्तर-वर्तमान समय में गठबंधन की राजनीति समय की माँग बन गई है। इससे लोकतंत्र अपने आपको अछूता नहीं रख सकता। क्योंकि किसी भी दल को सरकार बनाने के लिए आवश्यक बहुमत नहीं मिल पा रहा है। इसलिए राजनीतिक दल चुनाव के पहले या चुनाव के बाद दलों से गठबंधन करते हैं। यद्यपि इन दलों के सिद्धांत एवं विचारों में काफी भिन्नता होती है। गठबंधन में राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि सरकार के कार्यक्रमों एवं नीतियों में हस्तक्षेप करते हैं जिससे



सरकार की कल्याणकारी कामों में मुश्किलें आती हैं। लोकतांत्रिक तरीके से काम-काज नहीं हो पाता। अतः गठबंधन की राजनीति लोकतंत्र को प्रत्यक्षतः प्रभावित करती है

#### **18. राजनीतिक दल देश के विकास में किस प्रकार योगदान करते हैं?**

उत्तर किसी भी देश का विकास वहाँ के राजनीतिक दलों की स्थिति पर निर्भर करता है। जिस देश में राजनीतिक दलों के विचार, सिद्धांत एवं दृष्टिकोण ज्यादा व्यापक होंगे उस देश का राष्ट्रीय विकास उतना ही ज्यादा होगा। इसलिए कहा जाता है कि किसी भी देश के राष्ट्रीय विकास में राजनीतिक दलों की मुख्य भूमिका होती है। दरअसल राष्ट्रीय विकास के लिए जनता को जागरूक, समाज एवं राज्य में एकता एवं राजनीतिक स्थायित्व का होना आवश्यक हैं। इन सभी कार्यों में राजनीतिक दल ही मुख्य भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय विकास के लिए राज्य एवं समाज में एकता स्थापित होना आवश्यक है। इसके लिए राजनीतिक दल एक महत्वपूर्ण संस्था के रूप में काम करता है। राजनीतिक दलों में विभिन्न जातियों, धर्मों, वर्गों एवं लिंगों के सदस्य होते हैं। ये सभी अपने-अपने जाति, धर्म एवं लिंग का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। राजनीतिक दल ही किसी देश में राजनीतिक स्थायित्व ला सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि राजनीतिक दल सरकार के विरोध की जगह उसकी रचनात्मक आलोचना करें। राष्ट्रीय विकास के लिए यह भी आवश्यक है कि शासन के निर्णयों में सबकी सहमति और सभी लोगों की भागीदारी हो। इस प्रकार के काम को राजनीतिक दल ही करते हैं। राजनीतिक दल संकट के समय रचनात्मक कार्य भी करते हैं। जैसे-प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत का कार्य आदि। राष्ट्रीय विकास के लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की नीतियाँ एवं कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं। सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सहयोग से विधानमंडल ऐसे नीतियों एवं कार्यक्रम पास कराने में सहयोग करते हैं। इन्हीं सब बातों के आधार पर हम समझ सकते हैं कि राजनीतिक दल राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः राष्ट्रीय विकास में राजनीतिक दल बहुत ही व्यापक रूप से योगदान करते हैं

#### **19. लोकतंत्र के लिए राजनीतिक दल क्यों आवश्यक हैं?**

उत्तर-राजनीतिक दल लोकतंत्र की आधारशिला हैं। ये उत्तरदायी शासन के परमावश्यक अंग हैं। राजनीतिक दलों के बिना लोकतंत्र की कल्पना नहीं हो सकती। जहाँ राजनीतिक दलों को काम करने की स्वतंत्रता नहीं होती तथा जहाँ एक ही राजनीतिक दल होता है, वहाँ स्वतंत्रता का अभाव होता है। इसीलिए, राजनीतिक दलों को 'लोकतंत्र का प्राण' कहा जाता है। प्रतिनिधिक लोकतंत्र की सफलता राजनीतिक दलों पर ही निर्भर होती है। राजनीतिक दल प्रतिनिधियों को निर्वाचन में भाग लेते हैं। फाइनर के अनुसार, "दलों के बिना मतदाता या तो नपुंसक हो जाएँगे या विनाशकारी जो ऐसी असंभव नीतियों का अनुगमन करेंगे, जिससे राजनीतिक यंत्र ध्वस्त हो जाएगा।"

राजनीतिक दल मतदाताओं का मार्गदर्शन करते हैं। राजनीतिक दल ही लोकतंत्र को व्यावहारिक रूप देते हैं। ब्राइस का कथन है, "दल अनिवार्य है। कोई भी बड़ा स्वतंत्र देश उनके बिना नहीं रह सकता है।" राजनीतिक दल जनता को सार्वजनिक प्रश्नों एवं समस्याओं के प्रति जागरूक रहने की शिक्षा देते हैं। ये जनमत का निर्माण करते हैं। नागरिकों में शासन के प्रति जागरूकता उत्पन्न करते हैं और उनके राजनीतिक कर्तव्यों का बोध कराते हैं। अतः यहाँ राजनीतिक दलों की महत्ता बहुत अधिक है।

## **20. लोकतंत्र किस प्रकार आर्थिक संवृद्धि एवं विकास में सहायक है?**

उत्तर-लोकतंत्र जनता के प्रति उत्तरदायी और समानता के सिद्धांत पर आधृत शासन व्यवस्था है। लोकतंत्र से यह आशा की जाती है कि यह आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए आर्थिक संवृद्धि एवं विकास का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोकतंत्र में जनता की भागीदारी से अच्छे निर्णय एवं नीतियाँ निर्धारित करने के लिए प्रयास किए जाते हैं। जनसहयोग से आर्थिक संवृद्धि एवं विकास की इन नीतियों को लागू करने के प्रयास किए जाते हैं।

आर्थिक विकास के लाभ को इस प्रकार वितरित करने की योजना बनाई जाती है ताकि अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम किया जा सके। पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से ऐसी योजनाओं एवं कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाता है। इससे विकास के कार्यों में जनता की भागीदारी सुनिश्चित होती है। वितरण और लाभ की प्राप्ति में पारदर्शिता आती है।

## **21. लोकतंत्र की सफलता के लिए कौन-सी आवश्यक शर्तें हैं?**

उत्तर- भारतीय लोकतंत्र की सफलता के लिए कुछ आवश्यक एवं प्रधान तत्त्वों का उल्लेख करना जरूरी है, जो इस प्रकार हैं-

(i) जनता की जागरूकता- भारत में जनता की जागरूकता के लिए सरकार तत्पर है। राजनीतिक दल एवं मीडिया भारत में जनता की जागरूकता में वृद्धि के लिए निरंतर प्रयासरत है। अनेक सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाएँ भी जनता की जागरूकता हेतु प्रयासरत एवं तत्पर हैं।

(ii) लोकतंत्र में आस्था और विश्वास- भारत में लोकतंत्र के प्रति जनता का

अटूट आस्था है। यही कारण है कि हमने आजादी के बाद लोकतंत्र को अपनाया।

(iii) शिक्षा-लोकतंत्र में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा ही

मनुष्य को अपने अधिकार और कर्तव्य का सही ज्ञान करा सकती है। मतदाता अपने मताधिकार का सही सदुपयोग शिक्षा के माध्यम से ही करता है। शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार में शामिल किया गया है ताकि अपने अधिकार और कर्तव्य के प्रति सजग रहे।

(iv) आर्थिक समानता- आर्थिक समानता के बिना लोकतंत्र अधूरा है। एक भूखे व्यक्ति के लिए वोट का कोई महत्त्व नहीं। आर्थिक समानता स्थापित कर ही लोकतंत्र को सफल बनाया जा सकता है। ठीक ही कहा गया है, "आर्थिक समानता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता व्यर्थ है।"

(v) स्थानीय स्वशासन-लोकतंत्र की सफलता के लिए स्थानीय स्वशासन की स्थापना आवश्यक है। सत्ता की साझेदारी में ज्यादा से ज्यादा लोगों की भागीदारी का अवसर मिलता है। इन कार्यों में उनकी दिलचस्पी बढ़ती है। इस व्यवस्था में समस्याओं का समाधान शीघ्र हो पाता है। स्थानीय संस्थाएँ लोगों को राजनीतिक प्रशिक्षण देती हैं, जो लोकतंत्र की सफलता के लिए बहुत आवश्यक है।

## **22. भारतवर्ष में लोकतंत्र कैसे सफल हो सकता है?**

उत्तर-लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक शर्तें इस प्रकार हैं-

(i) लोकतंत्र में विश्वास - जनता का लोकतंत्र में विश्वास लोकतंत्र की

सफलता का सबसे आवश्यक शर्त है। लोकतंत्र में आस्था से ही शासन के कार्यों में जनता की दिलचस्पी बढ़ती है।

(ii) शिक्षा-शिक्षा लोकतंत्र की सफलता की एक आवश्यक शर्त मानी जाती है। शिक्षा ही मनुष्यों को अपने अधिकार और कर्तव्यों का सही ज्ञान प्रदान कर सकती है। लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है कि लोग अपने अधिकार और कर्तव्यों के प्रति सजग रहें। मतदाता अपने मतदान का दुरुपयोग शिक्षित होकर नहीं कर सकते हैं।

(iii) आर्थिक समानता- आर्थिक समानता के अभाव में लोकतंत्र की सफलता संदिग्ध हो जाती है। आर्थिक समानता स्थापित कर ही लोकतंत्र को सफल बनाया जा सकता है। इसके अभाव में लोग अपने मताधिकार का सही प्रयोग नहीं कर सकते। मतदान के महत्त्व को भूखा व्यक्ति नहीं समझ पाता।

(iv) स्थानीय स्वशासन-लोकतंत्र की सफलता के लिए स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं की स्थापना आवश्यक है। इन संस्थाओं से ही लोगों को राजनीतिक कार्यों एवं शासन-कार्यों में भाग लेने का अधिक अवसर मिलता है। इन कार्यों में उनकी दिलचस्पी भी बढ़ती है। स्थानीय संस्थाएँ लोगों को राजनीतिक प्रशिक्षण देती हैं जो लोकतंत्र की सफलता के लिए बहुत आवश्यक है।

(v) जनता की जागरूकता - जनता की जागरूकता लोकतंत्र को सफल बनाती है। भारत में जनता की जागरूकता के लिए सरकार तत्पर है।

(vi) सूचना का अधिकार-लोकतंत्र की सफलता के लिए भारत में नागरिकों को सूचना का अधिकार दिया गया है। इस अधिकार के द्वारा जनता को यह जानने का पूरा-पूरा अधिकार है कि विकास संबंधी योजनाओं का कार्यान्वयन कैसे हो रही है तथा उन योजनाओं में कैसे तथा कितनी राशि व्यय की जा रही है।

### **23. शिक्षा का अभाव लोकतंत्र के चुनौती क्यों है?**

उत्तर-सजग एवं जागरूक जनता और प्रबुद्ध जनमत लोकतंत्र का रखवाला है। शिक्षित जनता ही राजनीति के प्रति सजग और अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकती है। शिक्षा के अभाव में मतदाता अपने मताधिकार का सही प्रयोग नहीं कर पाते हैं। मताधिकार के दुरुपयोग से लोकतंत्र की नींव कमजोर होती है। शिक्षा का अभाव लोगों को सरकार के प्रति लापरवाह और उदासीन बना देता है। उन्हें सरकार के कामकाज में दिलचस्पी नहीं रहती हैं अतः अशिक्षा के अधिकार को मिटाना और शिक्षा का प्रसार लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

### **24. परिवारवाद और जातिवाद बिहार में किस तरह लोकतंत्र को प्रभावित करता है?**

उत्तर-अधिकांश राजनीतिक दल एवं उनके नेता अपने परिवार एवं सगे-संबंधियों को राजनीति में लाने का प्रयास करती हैं। यही राजनीति में परिवारवाद है। राजनीतिक दलों के द्वारा जाति के आधार पर उम्मीदवार खड़े किये जाते हैं। इससे लोकतंत्र कमजोर हुआ है। वास्तव में यह लोकतंत्र को प्रभावित करता है। सामान्यतः प्रत्येक चुनाव में विशेष कर टिकट बँटवारे के समय ऐसी परिस्थिति विशेष रूप से मुखरित होती है। हरेक दल के नेता अपने-अपने परिवार के भाई-भतीजे, रिश्ते-नाते के लिए पार्टी टिकट के बँटवारे में पैरवी करते नजर आते हैं। वास्तव में जनकल्याण अथवा जनसेवा की भावना से उनका कोई लेना देना नहीं होता है। राजनीतिक दल चुनाव के समय अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं को दर किनार कर अपने परिवार को आगे बढ़ाते हैं। या सत्ता की प्राप्ति

के बाद विभिन्न पदों पर आसीन करते हैं। कुछ दिनों पहले विधानसभा के उप-चुनाव में जनता दल (यू०) ने घोषणा की थी कि पार्टी कार्यकर्ताओं के रिश्तेदारों को टिकट नहीं दी जाएगी तो पार्टी में काफी बवाल मचा था।

### 25. आतंकवाद लोकतंत्र की चुनौती है। कैसे?

उत्तर-आतंकवाद या दहशतगर्दी निश्चित तौर पर किसी भी लोकतांत्रिक देश के लिए समस्या है, चुनौती है। आतंकवाद का उद्देश्य जानमाल की क्षति करते हुए जनता के मनोबल को तोड़ना है। जनता द्वारा चुनी गई लोकप्रिय सरकार के संबंध में यह संदेश प्रसारित करना कि मुट्ठी भर लोगों के सामने चुनी गयी सरकार विवश है। आतंकवादी जब चाहे अपनी आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम दे दे तथा सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक ढाँचे को प्रभावित कर जाएँ। आतंकवादी गतिविधियाँ आंतरिक अथवा बाह्य दोनों प्रकार की हो सकती हैं। आतंकवाद से लोकतंत्र प्रभावित होने लगती है। विकास के कार्यों में लगाए जाने वाले पैसों को सुरक्षा में लगाना पड़ जाता है। पुलिस बल/सैन्य बल/ कमाण्डो बल एवं संबंधित सामग्री की खरीद से देश के विकास की गति प्रभावित होने लगी है। अतः लोकतांत्रिक सरकारों को चाहिए कि वह देखें कि समाज व देश का कोई ऐसा वर्ग स्वयं इस बात से पीड़ित या प्रताड़ित महसूस न करे कि उसको समाज में उचित न्याय नहीं मिल पा रहा है। इससे उपजे असंतोष का बुरा प्रभाव समाज पर तो पड़ता ही है।

### 26. अर्थव्यवस्था की संरचना से आप क्या समझते हैं? इन्हें कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर-अर्थव्यवस्थाओं का व्यवसाय अथवा आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अर्थव्यवस्था की संरचना की जाती है। अर्थव्यवस्था के अंतर्गत कई सारगर्भित तथ्य जैसे-उत्पादन, उपभोग, विनिमय आदि आते हैं। इनमें कई गतिविधियाँ संचालित होती हैं जिसमें बीमा, बैंक, व्यापार, कृषि, संचार आदि उल्लेखनीय हैं। इन क्रियाओं के आधार पर अर्थव्यवस्था को प्रमुख तीन भागों में विभाजित किया गया है।

(i) प्राथमिक क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, उद्योग या व्यवसाय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसलिए इस क्षेत्र को कृषि क्षेत्र भी कहा जाता है। आर्थिक विकास के प्रारंभिक काल में कृषि पर विशेष बल दिया गया, क्योंकि इसमें कम पूँजी की आवश्यकता होती थी। वर्तमान समय में भी कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। यह क्षेत्र उद्योगों को कई मूलभूत सुविधाएँ प्रदान करता है। कृषि के अलावे पशुधन, वन, मत्स्यपालन आदि संबंधित तथ्य आते हैं।

### 27. बिहार के आर्थिक पिछड़ेपन के क्या कारण हैं? बिहार के पिछड़ेपन को दूर करने के उपायों को लिखें।

उत्तर- बिहार में पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण हैं-

(i) तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या बिहार में तीव्र गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 10,38,04,637 करोड़ हो गयी है। बढ़ती जनसंख्या विकास में बड़ी बाधा है।

(ii) धीमी कृषि का विकास राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। यहाँ की कृषि व्यवस्था उन्नत नहीं है। जिससे कृषि पिछड़ी हुई है।

(iii) उद्योग धंधों का अभाव झारखण्ड के अलग होने से अधिकांश उद्योग-धंधे झारखंड चले गये हैं, जो पिछड़ापन का मुख्य कारण है।

(iv) बाढ़ एवं सूखा से क्षति बिहार को बाढ़ एवं सूखा से प्रतिवर्ष काफी क्षति उठानी पड़ती है। प्रत्येक वर्ष सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, सहरसा आदि जिलों में बाढ़ तथा सूखा की स्थिति देखने को मिलती है।

(v) गरीबी बिहार भारत के बीमारू राज्यों में से एक है। प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से कम है। इस प्रकार यहाँ गरीबी का कुचक्र चलता रहता है।

(vi) प्राकृतिक साधनों के समुचित उपयोग का अभाव बिहार में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। झारखण्ड के अलग हो जाने के बाद यहाँ वन एवं खनिज की कमी हो गयी है। इसके अभाव में बिहार पिछड़ापन का शिकार है।

(vii) कुशल प्रशासन का अभाव - बिहार में प्रशासन व्यवस्था की स्थिति भी काफी खराब है। पिछड़ापन दूर करने के उपाय- बिहार का आर्थिक पिछड़ापन आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कारणों का संयुक्त परिणाम है तथा इसके संवृद्धि एवं विकास के लिए एक समेकित कार्यक्रम अपनाना आवश्यक है। बिहार मूलतः एक कृषि एवं ग्राम प्रधान राज्य है। अतः कृषि के विकास और आधुनिकीकरण के बिना राज्य की संवृद्धि संभव नहीं है। बिहार में कृषि की वर्तमान स्थिति अत्यंत शोचनीय है। इसमें सुधार के लिए भूमि सुधार कार्यक्रमों का प्रभावपूर्ण कार्यान्वयन, सिंचाई-सुविधाओं का विस्तार, कृषि कार्यों के लिए पर्याप्त बिजली की आपूर्ति तथा बाढ़ और जल जमाव की समस्याओं का समाधान आवश्यक है। बिहार की भूमि उर्वर है और यहाँ कई प्रकार की व्यावसायिक फसलों का उत्पादन होता है। अतएव, इसके पिछड़ेपन को दूर करने के लिए राज्य में खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को विकसित करना भी आवश्यक है।

**28. भारत में बुनियादी सुविधाएँ या आधारभूत ढाँचा का वर्णन करें।**

उत्तर- भारत में बुनियादी सुविधाएँ अथवा आधारभूत ढाँचा रीढ़ की हड्डी के समान है। इसके बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। बुनियादी सुविधाएँ या आधारभूत ढाँचा को दो भागों में बाँटा गया है जो निम्नलिखित हैं-

आर्थिक आधारभूत संरचना- इसका संबंध प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक विकास के क्षेत्रों से है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित को सम्मिलित किया गया है। (i)

(क) वित्त-बैंकिंग क्षेत्र, बीमा क्षेत्र आदि।

(ख) ऊर्जा - कोयला, विद्युत, गैस, पेट्रोलियम।

ग) यातायात- रेलवे, सड़क, वायुयान, जलयान।

(घ) संचार- डाक, तार, टेलीफोन, टेली संचार, मीडिया एवं अन्य।

(ii) गैर-आर्थिक आधारभूत संरचना- यह अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य को क्षमता एवं उत्पादन में वृद्धि कर आर्थिक विकास में सहायता प्रदान करता है। जैसे-शिक्षा, स्वास्थ्य एवं नागरिक सेवाएँ इत्यादि

**29. भारत में बुनियादी सुविधाएँ या आधारभूत ढाँचा का वर्णन करें।**

उत्तर- भारत में बुनियादी सुविधाएँ अथवा आधारभूत ढाँचा रीढ़ की हड्डी के समान है। इसके बिना विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। बुनियादी सुविधाएँ या आधारभूत ढाँचा को दो भागों में बाँटा गया है जो निम्नलिखित हैं-

(1) आर्थिक आधारभूत संरचना- इसका संबंध प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक

विकास के क्षेत्रों से है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित को सम्मिलित किया गया है।

(क) वित्त- बैंकिंग क्षेत्र, बीमा क्षेत्र आदि।

(ख) ऊर्जा- कोयला, विद्युत, गैस, पेट्रोलियम।

(ग) यातायात- रेलवे, सड़क, वायुयान, जलयान।

(घ) संचार- डाक, तार, टेलीफोन, टेली संचार, मीडिया एवं अन्य।

(ii) गैर-आर्थिक आधारभूत संरचना- यह अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य की क्षमता एवं उत्पादन में वृद्धि कर आर्थिक विकास में सहायता प्रदान करता है। जैसे-शिक्षा, स्वास्थ्य एवं नागरिक सेवाएँ इत्यादि

### **30. आर्थिक विकास क्या है? आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अंतर बताइए।**

उत्तर-आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा दीर्घकाल में किसी अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रों में उत्पादकता का ऊँचा स्तर प्राप्त करना होता है। इसके लिए विकास प्रक्रिया को गतिशील करना पड़ता है।

सामान्य तौर पर आर्थिक विकास एवं वृद्धि, दोनों में कोई अंतर नहीं माना जाता। दोनों शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। अर्थशास्त्र के विशेषज्ञों ने इनमें निम्नलिखित अंतर पाया है।

**आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि में अन्तर :**

(i) आर्थिक विकास विकासशील देशों के विकास से संबंधित अवधारणा है जबकि आर्थिक वृद्धि विकसित देशों के विकास से संबंधित अवधारणा है।

(ii) आर्थिक विकास में आकस्मिक तथा रुक-रुककर परिवर्तन आते हैं जबकि आर्थिक वृद्धि एक क्रमिक, दीर्घकाल में स्थिर प्रक्रिया है।

(iii) आर्थिक विकास उन्नति की प्रबल इच्छा एवं सृजनात्मक शक्तियों का प्रतिफल है जबकि आर्थिक वृद्धि एक परंपरागत तथा नियमित घटनाओं का परिणाम है।

(iv) आर्थिक वृद्धि के अन्तर्गत उत्पादकता में वृद्धि होती है जबकि आर्थिक विकास के अन्तर्गत उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ तकनीकी और संस्थागत परिवर्तन होता है।

(v) आर्थिक विकास गत्यात्मक संतुलन की स्थिति को बताती है जबकि आर्थिक वृद्धि स्थैतिक संतुलन की स्थिति होती है।



**31. राष्ट्रीय आय का अर्थ बताइए। इसकी गणना की प्रमुख विधियों की चर्चा करें।**

उत्तर-किसी देश की पूँजी एवं श्रम का उसके प्राकृतिक साधनों पर प्रयोग करने से प्रतिवर्ष वस्तुओं का एक शुद्ध समूह उत्पन्न होता है जिसमें भौतिक तथा क अभौतिक पदार्थ एवं सभी प्रकार की सेवाएँ सम्मिलित रहती है। इस संपूर्ण विशुद्धत उत्पत्ति को देश की वास्तविक वार्षिक आय या वार्षिक राजस्व अथवा राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय की माप के निम्न तरीके हैं-

(i) उत्पत्ति गणना पद्धति-इस पद्धति के अनुसार किसी वर्ष में किसी देश में कृषि, उद्योग तथा उत्पादन के अन्य क्षेत्रों में जो उत्पादन होता है उसकी गणना की जाती है। इस कुल उत्पत्ति में से अचल पूँजी का हास तथा चल पूँजी के प्रतिस्थापन की आय तथा कर एवं बीमा आदि का व्यय निकालकर जो शेष बचता है उसे शुद्ध उत्पत्ति कहते हैं। यह शुद्ध उत्पत्ति राष्ट्रीय आय होती है। इसे उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच वितरित किया जाता है।

(ii) आय गणना पद्धति-राष्ट्रीय आय को मापने की आय गणना पद्धति वह विधि है जो एक लेखा वर्ष में उत्पादन के प्राथमिक साधनों को उनकी उत्पादक सेवाओं के बदले किए गए भुगतानों की दृष्टि से राष्ट्रीय आय की माप करती है। (iii) व्यय विधि-व्यय विधि वह विधि है जिसके द्वारा एक लेखा वर्ष में बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद पर किए गए अंतिम व्यय को मापा जाता है। यह अंतिम व्यय बाजार कीमत पर सकल घरेलू उत्पाद के बराबर होता है।

(iv) व्यावसायिक गणना पद्धति- इस प्रणाली में लोगों की आय की गणना इनके पेरों के अनुसार की जाती है। जहाँ आय के पर्याप्त आँकड़े नहीं प्राप्त होते हैं। वहाँ इसी पद्धति को काम में लाया जाता है। पहले विभिन्न प्रकार के व्यवसाय से लोगों को प्राप्त आय की गणना की जाती है और तब इनका कुल योग राष्ट्रीय = आय को सूचित करता है। जैसे- कृषि, उद्योग, यातायात तथा अन्य व्यवसाय।

(v) सामाजिक लेखांकन पद्धति-प्रो० रिचर्ड ने राष्ट्रीय आय की माप करने के लिए इस पद्धति का प्रयोग किया था। सामाजिक लेखांकन आर्थिक नीति का एक नियोजक यंत्र है। यह राष्ट्र की गतिविधियों पर विशेष ध्यान रखता है तथा देश की आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायता करता है

**32. मुद्रा के आर्थिक महत्त्व पर प्रकाश डालें।**

उत्तर-वर्तमान युग मुद्रा का युग है। मुद्रा आधुनिक समय में आर्थिक जीवन का आधार केंद्र है। मुद्रा के आर्थिक महत्त्व को बताते हुए मार्शल का कथन है-”मुद्रा वह धूरी है जिसके चारों ओर समस्त अर्थ विज्ञान चक्कर लगाता है।” इस संदर्भ में मुद्रा का आर्थिक महत्त्व एक विशेष अर्थ को संबोधित करता है।

(i) उपभोग के क्षेत्रों में मुद्रा का महत्त्व - उपभोग के क्षेत्रों में मुद्रा का एक अलग महत्त्व है। इसके कारण विभिन्न वस्तुओं की उपलब्धि संभव हो पाती है। इससे संचय आसान हो जाता है जो वस्तु विनिमय प्रणाली में संभव नहीं था। किसी वस्तु का उपभोग कर लेने के बाद उसका भुगतान करने में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इससे अधिकतम संतुष्टि की प्राप्ति होती रही है

(ii) उत्पादन के क्षेत्रों में मुद्रा का महत्त्व - मुद्रा के प्रचलन में उत्पादन जगत में विशेष बदलाव आया। इसके कारण उत्पत्ति के साधनों को जुटाना और अधिक आसान हो गया। श्रम का विभाजन होने से उत्पादन प्रक्रिया को गति मिली। फलतः बड़े स्तर पर उत्पादन संभव हो सका।

(iii) विनिमय के क्षेत्रों में मुद्रा का महत्त्व-मुद्रा की सबसे बड़ी उपलब्धि वस्तु विनिमय प्रणाली की कठिनाइयों को दूर करने में रही है। इसके फलस्वरूप बैंक व साख संस्थाओं का विकास हुआ। पूँजी संचय की संभावना धीरे-धीरे बढ़ती चली गई। एक सबसे बड़ी उपलब्धि यह मिली की पूँजी सदैव अपनी गतिशील अवस्था में रही।

(iv) वितरण के क्षेत्रों में मुद्रा का महत्त्व - वितरण के क्षेत्रों में भी मुद्रा का अत्यधिक महत्त्व है। बड़े पैमाने के उत्पादन में लोग संयुक्त रूप से कार्य करते हैं। उन सभी को उनके कार्य का पुरस्कार मुद्रा के रूप में ही प्रदान किया जाता है।

(v) राजस्व के क्षेत्र में मुद्रा का महत्त्व सरकार के आय-व्यय संबंधी कार्य मुद्रा, से ही होते हैं। वह जो भी कर लगाती है, मुद्रा में ही देना पड़ता है। वह अपना व्यय भी मुद्रा में ही करती है। मुद्रा के कारण सरकार अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत का पालन करने में समर्थ है।

### 33. बचत क्या है? बचत को निर्धारित करने वाले तत्त्वों की विवेचना करें।

उत्तर-बचत आय का वह भाग है जिसका वर्तमान में उपभोग नहीं किया जाता है तथा इस बचत से ही पूँजी का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति की मासिक आय 10,000 रुपये है जिसमें वह 9,000 रुपये उपभोग पर व्यय करता है, तो शेष 1000 रुपये उसकी बचत है।

इस प्रकार कुल-आय उपभोग व्यय = बचत

(i) बचत करने की शक्ति-आय एवं व्यय का अनुपात ऐसा होना चाहिए

कि आय जितनी अधिक होगी, उसके अनुपात में व्यय जितना कम होगा वहाँ बचत की शक्ति उतनी ही अधिक होगी। इसके अलावे बचत करने की शक्ति आय एवं धन की वितरण पर भी निर्भर करती है।

(ii) बचत करने की इच्छा- बचत, लोगों में बचत करने की इच्छा पर निर्भर करती है। बचत करने की इच्छा कई मुद्दों द्वारा प्रभावित होती है, जैसे व्यक्ति की दूरदर्शिता, पारिवारिक प्रेम, ब्याज कमाने की इच्छा, सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यक्ति का स्वभाव, पेशे का प्रभाव आदि पर बचत करने की इच्छा निर्भर करती है।

(iii) बचत करने की सुविधा लोगों की बचत करने की सुविधाओं पर भी बचत निर्भर करती है। ये सुविधाएँ कई प्रकार से बचत को प्रभावित कर सकती हैं, जैसे-शांति एवं सुरक्षा की व्यवस्था हो, पूँजी का विनियोग करने से लाभ हो तो बचत ज्यादा होगी, इसके अलावा वित्तीय संस्थाओं की सुविधा, मुद्रा के मूल्य में स्थायित्व जैसी सुविधा हो तो बचत अधिक करेंगे।

#### **34. मुद्रा के कार्यों को विस्तार से बताइए। उत्तर-मुद्रा के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं-**

(i) विनिमय का माध्यम-मुद्रा विनिमय का माध्यम है। मुद्रा क्रय तथा विक्रय दोनों में ही मध्यस्थ का कार्य करती है।

(ii) मूल्य का मापक मुद्रा मूल्य का मापक है। किस वस्तु का कितना मूल्य होगा, यह मुद्रा द्वारा ही संभव है। मुद्रा के इस कार्य के कारण विनिमय करना आसान हो गया है।

(iii) विलंबित भुगतान का मान-आधुनिक युग में बहुत सा आर्थिक कार्य उधार पर होता है और उसका भुगतान बाद में किया जाता है। मुद्रा ने उधार देने तथा लेने के कार्य को काफी आसान बना दिया है।

(iv) मूल्य का संचय- मनुष्य वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की आवश्यकताओं के लिए भी कुछ बचाकर रखना चाहता है। मुद्रा की यह विशेषता है कि इसे जमा करके रखा जा सकता है।

(v) क्रय शक्ति का हस्तांतरण - मुद्रा के द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी एक स्थान पर अपनी संपत्ति बेचकर किसी अन्य स्थान पर नयी सम्पत्ति खरीद सकता है।

#### **35. विनिमय क्या है? इसके स्वरूपों का वर्णन करें।**

उत्तर-आवश्यकता के अनुसार आपस में एक-दूसरे के द्वारा उत्पादित की हुई चीजों / वस्तुओं के आदान-प्रदान से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना तथा प्राप्त आय से अपनी आवश्यकतानुसार उससे अन्य वस्तुएँ प्राप्त करना ही "विनिमय" है। आज विनिमय का महत्त्व काफी बढ़ गया है।

विनिमय के स्वरूप (Form of Exchange) - विनिमय के दो रूप हैं-

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली तथा

(ii) मौद्रिक विनिमय प्रणाली

(i) वस्तु विनिमय प्रणाली - वस्तु विनिमय उस प्रणाली को कहा जाता है जिसमें एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु का आदान-प्रदान होता है। दूसरे शब्दों में, "किसी एक वस्तु के बदले में दूसरी वस्तु के साथ बिना मुद्रा के प्रत्यक्ष रूप से लेन-देन वस्तु विनिमय प्रणाली कहलाता है। उदाहरण के लिए, गेहूँ से चावल बदलना, सब्जी से तेल बदलना, दूध से दही बदलना आदि। यह प्रणाली पुराने जमाने में प्रचलित थी।

(ii) मौद्रिक विनिमय प्रणाली (Monetary system) - वस्तु विनिमय की कठिनाई को दूर करने के लिए मुद्रा का आविष्कार किया गया। मुद्रा के आविष्कार से मनुष्य के व्यापारिक जीवन में सुविधापूर्वक आदान-प्रदान की स्थिति संभव हो सकी है। मुद्रा के आविष्कार से वस्तु विनिमय प्रणाली की सारी कठिनाइयों का आविष्कार समाधान हो गया। इस प्रकार इस संदर्भ में क्राउथर ने कहा कि "मनुष्य के सभी आविष्कारों में मुद्रा का आविष्कार एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

इस प्रणाली में मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। इस तरह मुद्रा का विकास का इतिहास एक तरह से मानव सभ्यता का इतिहास है।

### **36. व्यावसायिक बैंकों के प्रमुख कार्यों की विवेचना करें।**

उत्तर-सामान्य बैंकिंग का कार्य करनेवाले बैंकों को व्यापारिक अथवा व्यावसायिक बैंक कहते हैं। इन बैंकों का मुख्य उद्देश्य व्यापारिक संस्थानों की अल्पकालीन वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। ये धन जमा करने, ऋण देने, चेकों से संग्रह या भुगतान तथा एजेंसी-संबंधी अनेक कार्य करते हैं। इनके प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

(1) जमा स्वीकार करना व्यापारिक बैंकों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य जनता से रकम जमा करना होता है। ये विभिन्न प्रकार की योजनाओं के तहत रकम लेते हैं। जैसे-चालू जमा योजना, बचत जमा योजना, सावधि जमा योजना तथा आवर्ती जमा योजना।

(ii) ऋण देना बैंकों का दूसरा मुख्य कार्य लोगों को ऋण देना है। बैंक के पास जो रुपया जमा के रूप में आता है उसमें से एक निश्चित राशि नकद-कोष में रखकर बाकी रुपया बैंक द्वारा दूसरे व्यक्तियों को उधार दे दिया जाता है।

(iii) ऐजेंसी सम्बन्धी कार्य व्यावसायिक बैंक, अपने ग्राहकों के लिए उनके एजेंट का कार्य करते हैं। इसके अन्तर्गत ग्राहकों के लिए भुगतान प्राप्त करना, ग्राहकों की ओर से भुगतान करना, प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय-करना, प्रतिनिधि का कार्य करना आदि आते हैं।

(iv) सामान्य उपयोगिता सम्बन्धी कार्य इसके अन्तर्गत मुद्रा का स्थानान्तरण, साख-पत्र तथा यात्री चेक जारी करना, बहुमूल्य वस्तुओं की सुरक्षा, व्यापारिक सूचना तथा आँकड़े एकत्रित करना, वित्त सम्बन्धी सलाह आदि कार्य शामिल हैं। इस तरह व्यावसायिक बैंक अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का संपादन करते हैं।

### **37. सहकारिता के महत्त्वपूर्ण तत्त्व क्या हैं? राज्य के विकास में इसकी भूमिका का वर्णन करें।**

उत्तर-सहकारिता एक ऐच्छिक संगठन है। इसमें व्यक्ति स्वेच्छा से अपनी आर्थिक उन्नति के लिए सम्मिलित होते हैं। सहकारिता के मूल तत्त्व इस प्रकार हैं- (i) सहकारिता का ऐच्छिक संगठन है। (ii) इसमें सभी सदस्यों को समान अधिकार प्राप्त होते हैं। (iii) इसकी स्थापना सामान्य आर्थिक हितों की प्राप्ति के लिए होती है। (iv) इसका प्रबंध प्रजातांत्रिक सिद्धांतों के आधार पर होता है।

बिहार एक ग्राम-प्रधान राज्य है। यहाँ की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। इनमें अधिकांश कृषि एवं इससे संबद्ध क्रियाकलापों द्वारा जीविकोपार्जन करते हैं। बिहार के ग्रामीण परिवारों में बहुत छोटे अथवा सीमांत किसानों तथा भूमिहीन श्रमिकों की संख्या सर्वाधिक है। इस प्रकार के सीमित साधनों वाले व्यक्ति सहकारी संस्थाओं के माध्यम से ही अपने आर्थिक हितों में वृद्धि कर सकते हैं। हमारे राज्य के विकास में सहकारिता की भूमिका कई प्रकार से महत्त्वपूर्ण हो सकती है। वर्तमान में सहकारी संस्थाएँ कृषि ऋण की आवश्यकताओं का एक बहुत छोटा भाग पूरा करती हैं। परिणामतः महाजनों आदि पर छोटे किसानों की निर्भरता बहुत अधिक है। सहकारिता के विस्तार से ग्रामीण क्षेत्रों में महाजनों और साहूकारों का प्रभुत्व कम होगा तथा ब्याज की दरों में गिरावट आएगी। सहकारी संस्थाएँ कृषि उपज के विक्रय, भूमि की चकबंदी तथा उन्नत खेती की व्यवस्था करने में भी सहायक हो सकती है।

राज्य के विभाजन के पश्चात बिहार के अधिकांश बड़े और मँझोले उद्योग झारखंड में चले गए हैं तथा अब राज्य में छोटे आकारवाले उद्योगों की ही प्रधानता है। लेकिन, पूँजी के अभाव में बिहार के अधिकांश कुटीर एवं लघु उद्योग रुग्ण हो गए हैं। इनके पुनरुद्धार में भी सहकारी संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

### **38. स्वयं सहायता समूह क्या है? इसमें महिलाएँ अपनी भूमिका किस प्रकार निभाती हैं?**

उत्तर- स्वयं सहायता समूह वास्तव में ग्रामीण क्षेत्र में 15-20 व्यक्तियों (खासकर महिलाओं) का एक अनौपचारिक समूह होता है। जो अपनी बचत तथा बैंकों से लघु ऋण लेकर अपने सदस्यों के पारिवारिक जरूरतों को पूरा करते हैं।

स्वयं सहायता समूह में 15-20 सदस्य होते हैं जो नियमित रूप से मिलते हैं और बचत करते हैं। एक या दो वर्षों के बाद अगर समूह नियमित रूप से बचत करते हैं तो समूह बैंक से ऋण प्राप्त करने के योग्य हो जाता है। ऋण समूह के नाम पर दिया जाता है और इसका मकसद सदस्यों के लिए स्वरोजगार के अवसरों का सृजन करना है। इससे न केवल महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो जाती हैं बल्कि समूह की नियमित बैठकों के जरिए लोगों को सामाजिक विषयों पर चर्चा करने का अवसर भी मिलता है। महिलाएँ दिए गए ऋण के द्वारा छोटे-छोटे कर्ज अपनी गिरवी जमीन छुड़वाने के लिए, कार्यशील पूँजी (बीज, खाद आदि के लिए), घर बनाने, सिलाई मशीन, हथकरघा, पशु इत्यादि सम्पत्ति खरीदने के लिए प्रयोग करती हैं।

इस प्रकार स्वयं सहायता समूह के द्वारा महिलाएँ अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करती हैं तथा उनकी स्थिति पहले से बेहतर हो जाती है।

### **39. वैश्वीकरण का बिहार पर पड़े प्रभावों को बताएँ।**

उत्तर-वैश्वीकरण का बिहार पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रभाव देखने को मिलता है सकारात्मक प्रभावों के कारण कृषि उत्पादनों में वृद्धि, विदेशी प्रत्यक्ष निवेशों की प्राप्ति, शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद एवं प्रतिव्यक्ति शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद में वृद्धि, रोजगार के अवसरों में वृद्धि, बहुराष्ट्रीय बैंक तथा बीमा कंपनियों का आगमन इत्यादि देखा गया है।

इसका राज्य पर नकारात्मक प्रभावों को भी देखा गया है जैसे कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों की अपेक्षा, कुटीर एवं लघु उद्योगों पर विपरीत प्रभाव, रोजगार पर विपरीत प्रभाव, आधारभूत संरचनाओं में निवेश में कमी।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यहाँ उद्योगों एवं बड़े व्यापारियों को अधिक लाभ की प्राप्ति हुई है। मॉल संस्कृति का भी जन्म हुआ है, परंतु कृषक एवं आम जनता आज भी इससे कम लाभ उठा पा रहे हैं।

#### **40. वन्य जीवों के हास के उत्तरदायी चार प्रमुख कारकों को लिखें।**

उत्तर-वन्य जीवों के हास के निम्नलिखित कारक हैं-

(1) वन्य जीवों का शिकार-आर्थिक लाभों के लिए कुछ लोग वन्य जीवों का शिकार करते हैं। फलतः उनकी संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही है।

(ii) प्रदूषण की समस्या- अम्ल वर्षा, पौधाघर प्रभाव जल एवं मृदा प्रदूषण और पराबैंगनी किरणें वन्य जीवों के हास के कारक हैं।

(iii) प्राकृतिक आवास का हास-वन्य जीवों का आवास क्षेत्र वन है। अप्रत्याशित ढंग से बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिक विकास, शहरीकरण, बड़े बाँध या अन्य परियोजनाएँ इनके आवास का अतिक्रमण कर रही हैं। (iv) वनों में आग लगना- प्राकृतिक या मानविक कारणों से वनों में आग लग जाती है। इससे वन्य जीव नष्ट हो जाते हैं।

#### **41. जैव विविधता क्या है? यह मानव जीवन के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?**

उत्तर-किसी विशेष क्षेत्र में उपस्थित एक सामुदायिक जातियों की संख्या एवं जातियों के अंतर्गत आनुवंशिक परिवर्तनशीलता की मात्रा उस क्षेत्र के समुदाय की जैव विविधता कहलाती है जैव विविधता मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह नई फसलों, औषधियों को प्राप्त करने का स्रोत है। बढ़ती हुई जनसंख्या के पेट भरने के लिए एवं स्वस्थ रहने के लिए इन फसलों एवं औषधियों का महत्व और भी अधिक है। इससे मानवीय विकास को गति प्रदान होती है। पर्यावरणीय परिवर्तन का सामना करने में जैव विविधता महत्वपूर्ण कार्य करता है। यह वर्तमान समय में सभी जातियों की आनुवंशिक विविधताओं को संरक्षित रखने में सहायक होता है।

इस प्रकार मानव जीवन को स्वस्थ, संतुलित तथा विकासशील रखने में जैव विविधता को अक्षुण्ण बनाए रखना मानव के लिए महत्वपूर्ण है।

#### **42. भारत में सौर ऊर्जा का भविष्य उज्ज्वल है।**

उत्तर-भारत ऊष्ण कटिबंधीय देश है, यहाँ अधिक समय धूप मिलती है। इसलिए सौर ऊर्जा उत्पन्न करने की यहाँ असीम संभावनाएँ हैं। यहाँ प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्र में 20 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है।

फोटोवोल्टाइक प्रौद्योगिकी द्वारा धूप को सीधे विद्युत में बदला जा सकता है। सूर्य की ऊर्जा से विद्युत उत्पन्न कर सौर चूल्हे और सौर विद्युत गृह का निर्माण किया जा सकता है।

सीजियम और कुछ अन्य धातुओं में यह विशेषता पायी जाती है कि थोड़ा गर्म होने पर भी उनमें से इलेक्ट्रॉन बाहर निकलने लगते हैं, इसी प्रवाह को बिजली कहते हैं। सूर्य के प्रकाश में यह क्रिया बिना खर्च के हो सकती है। जिन स्थानों पर दिन के समय आसमान खुला रहता है वहाँ आसानी से सौर ऊर्जा प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे गाँव में जहाँ बिजली का अभाव रहता है सरकार द्वारा ग्रामीणों को सोलर लैंप, सोलर चूल्हे उपलब्ध कराये जा रहे हैं। अभी भारत के गुजरात राज्य में भुज के निकट इसका सबसे बड़ा संयंत्र लगाया गया है। थार मरुस्थल में भी इसका बड़ा संयंत्र स्थापित किया जा सकता है।

#### 43. चावल की फसल के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाओं का उल्लेख करें।

उत्तर-चावल के उत्पादन की उपयुक्त दशाएँ- धान से चावल बनाया जाता है। धान मानसूनी जलवायु का फसल है जिसके लिए निम्नांकित दशाएँ उपयुक्त होती हैं-

(i) उच्च तापमान ( $20^{\circ}\text{C}$  से  $30^{\circ}\text{C}$  के बीच),

(ii) पर्याप्त वर्षा (200 cm वार्षिक वर्षा) कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उत्तम सिंचाई की व्यवस्था आवश्यक होती है,

(iii) समतल भूमि ताकि खेतों में पानी जमा रह सके, जलोढ़ दोमट मिट्टी धान की खेती के लिए उपयुक्त मानी जाती है,

(iv) पर्याप्त सस्ते श्रमिक। प्रमुख उत्पादन क्षेत्र- धान की खेती मुख्यतः गंगा, ब्रह्मपुत्र के मैदान में और डेल्टाई तथा तटीय भागों में की जाती है। इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, पंजाब, बिहार, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, उड़ीसा, असम, हरियाणा और केरल। इसकी खेती में लगी सर्वाधिक भूमि पश्चिम बंगाल और बिहार में है। परंतु सिंचाई और खाद के बल पर पंजाब धान का प्रति हेक्टेयर उत्पादन सबसे अधिक करता है।



दक्षिण भारत में इसकी खेती में सिंचाई का सहारा लेना पड़ता है। कावेरी, कृष्णा, गोदावरी और महानदी के डेल्टाओं में नहरों का जाल बिछा है जिससे इस क्षेत्र में कहीं दो फसल और कहीं तीन फसल तक धान की खेती की जाती है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन अधिक है। इसलिए यहाँ से दूसरे राज्यों को चावल भेजा जाता है।

#### **44. भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

उत्तर-भारतीय कृषि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- (i) जीवन-निर्वाह कृषि-भारतीय कृषि आजीविका प्रधान तथा प्राचीन एवं परंपरागत व्यवसाय है। भारत की 70% आबादी कृषि पर आधारित है इस प्रकार कृषि पर जनसंख्या का बोझ अधिक है।
- (ii) खाद्यान्नों की प्रधानता अधिक जनसंख्या के लिए भोजन जुटाने हेतु खाद्यान्नों का ही मुख्य रूप से उत्पादन करना पड़ता है। व्यापारिक फसलें कम पैदा की जाती हैं।
- (iii) कृषि के प्राचीन तरीके- भारत में कृषि कार्य अभी भी पुराने एवं पिछड़ी विधि से किया जाता है।
- (iv) कृषि का मानसून पर निर्भरता भारतीय कृषि पूर्णतः मानसूनी जलवायु पर निर्भर है। मानसून की अनिश्चितता का प्रभाव कृषि उत्पाद पर पड़ता है।
- (v) व्यापारिक कृषि इस प्रकार की कृषि में अधिक पूँजी, आधुनिक तकनीक का निवेश किया जाता है। अतः किसान अपनी लगाई पूँजी से अधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास करता है। जैसे चाय, कॉफी।

#### **45. भारतीय अर्थतंत्र में कृषि का क्या महत्त्व है? कृषि की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।**

उत्तर-भारतीय अर्थतंत्र में कृषि का निम्नलिखित महत्त्व हैं-

- (i) भारत की 70% आबादी रोजगार और आजीविका के लिए कृषि पर आश्रित है।
- (ii) देश के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में कृषि का योगदान 22% ही है। फिर भी, बहुत सारे उद्योगों को कच्चा माल कृषि उत्पाद से ही मिलता है।
- (iii) कृषि उत्पाद से ही देश की इतनी बड़ी जनसंख्या को खाद्यान्न की आपूर्ति होती है।

(iv) अनेक कृषि उत्पाद का भारत निर्यातक है जिससे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है।

(v) कृषि ने अनेक उद्योगों को विकसित होने का अवसर प्रदान किया है। भारतीय कृषि की विशेषताएँ भारत का एक बड़ा भू-भाग कृषि योग्य है।

यहाँ की जलवायु और उपजाऊ मिट्टी कृषि कार्य को बढ़ावा प्रदान करते हैं।

भारत में कहीं एक फसल, कहीं दो फसल और कहीं तीन-तीन फसल तक उगायी जाती है। भारत में फसलों की अदला-बदली भी की जाती है, यहाँ अनाज की फसलों - के बाद दलहन की खेती की जाती है। इससे मिट्टी में उर्वरा शक्ति बनी रहती है। यहाँ मिश्रित कृषि का भी प्रचलन है जिसमें गेहूँ, चना और सरसों की खेती एक साथ की जाती है।

#### **46. भारतीय रेल परिवहन की विशेषताओं का वर्णन करें।**

उत्तर- भारतीय रेल के निम्न विशेषता हैं-

(i) देश के विभिन्न महानगरों में मेट्रो रेल चालू हो गई है।

(ii) कई तीव्रगामी रेल सेवाएँ जैसे राजधानी एक्सप्रेस, गतिमान एक्सप्रेस, शताब्दी एक्सप्रेस, जनशताब्दी एक्सप्रेस, दूरंतो एक्सप्रेस बंदे भारत, हम सफर एक्सप्रेस, आरंभ की जा चुकी है।

(iii) भारत में अनेक लंबी दूरी की गाड़ियाँ प्रारंभ की गई है। जम्मूतवी से कन्याकुमारी तक चलने वाली हिमसागर एक्सप्रेस एवं गुवाहाटी से कन्याकुमारी तक विवेक एक्सप्रेस सबसे लम्बी दूरी की गाड़ी है।

(iv) महानगरों तथा बड़े शहरों में दैनिक यात्रियों के आवागमन के लिए DMU, EMU और MEMU रेलगाड़ी चलाई जा रही है।

(v) माल ढुलाई के लिए मालगाड़ियों में प्राइवेट कंटेनर एवं बैगन लगायी जा रही हैं।

(vi) रेल दुर्घटना को रोकने के लिए स्वनियंत्रणयुक्त रक्षा कवच (ACD) की व्यवस्था की गयी है।

(vii) 1 अगस्त, 1947 से रेल मंत्रालय द्वारा रेल यात्री बीमा योजना कार्य कर रही हैं।

(viii) अधिकांश स्टेशनों पर कंप्यूटरीकृत आरक्षण का प्रावधान है।

#### 47. बिहार की कृषि समस्याओं पर विस्तार से चर्चा करें।

उत्तर-बिहार की कृषि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण समस्याएँ निम्नलिखित हैं-

(i) प्राकृतिक आपदा- बिहार की कृषि बाढ़ और सूखा की समस्या से हमेशा ग्रसित रहती है। इससे जान-माल के साथ-साथ फसलों को भी नुकसान होता है। बिहार का 64 लाख हेक्टेयर बाढ़ ग्रस्त है।

(ii) जल जमाव उत्तरी और दक्षिणी बिहार के मैदानी भागों में क्रमशः चौर और टाल क्षेत्र में तीन से चार महीने जल जमाव रहते हैं। इससे खरीफ और रबी फसल प्रभावित होती है। 9.41 लाख हेक्टेयर भूमि जल जमाव से ग्रसित है।

(iii) बंजर भूमि- बिहार की लगभग 7 प्रतिशत भूमि इस वर्ग में सम्मिलित है। इनमें 5.33 प्रतिशत चाल परती, 1.42 प्रतिशत अन्य परती और 0.49 प्रतिशत कृषि योग्य बंजर भूमि है।

(iv) मिट्टी-अपरदन- बिहार का मैदानी भाग सतही अपरदन और पठारी एवं पर्वतीय भाग अवनालिका अपरदन से प्रभावित है। मैदानी क्षेत्र में मिट्टी के उपजाऊ तत्त्व बहकर अन्यत्र चले जाते हैं जिसे रेंगती हुई मौत (Creeping death) कहते हैं।

(v) मिट्टी का अत्यधिक उपयोग- बिहार के मैदान की मिट्टी हजारों वर्ष से लगातार फसल के अन्तर्गत है। इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हुई है। एक ही खेत में वर्ष में कई फसलें, पैदा की जाती हैं। इससे मिट्टी के विशेष उपजाऊ तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कृषि सम्बन्धी आर्थिक समस्याएँ भी हैं।

#### 48. सोन अथवा कोसी नदी घाटी परियोजना के महत्त्व पर प्रकाश डालें।

उत्तर-(i) सोन नदी घाटी परियोजना- यह परियोजना बिहार की सबसे पुरानी तथा पहली नदी घाटी परियोजना है। इस परियोजना का विकास अंग्रेज सरकार द्वारा 1874 ई० में हुआ। इसमें डेहरी के निकट से पूरब एवं पश्चिम की ओर नहरें निकाली गई हैं। इसकी कुल लम्बाई 130 कि०मी० है। इस नहर से पटना एवं गया जिले में कई शाखाएँ तथा उपशाखाएँ निकाली गई हैं जिससे औरंगाबाद, भोजपुर, बक्सर, रोहतास जिले की भूमि सिंचित की जाती है। वर्तमान में इससे कुल 4.5 लाख हेक्टेयर खेतों की सिंचाई की जाती है। सूखा प्रभावित क्षेत्र की सिंचाई की सुविधा प्राप्त होने से बिहार का दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र का प्रति हेक्टेयर उत्पादन का व्यय बढ़ गया है और चावल की अधिक खेती होने लगी है। इस कारण से इस क्षेत्र को चावल का कटोरा कहते हैं।

(iii) कोसी नदी घाटी परियोजना- इस परियोजना का प्रारंभ 1955 में बिहार के पूर्वांचल क्षेत्र में किया गया। कोसी नदी द्वारा इस क्षेत्र में भयानक बाढ़ एवं तबाही आती थी। कोसी नदी निरन्तर अपनी धारा बदलती रहती थी। अतः इसे 'बिहार का शोक' कहते थे। परियोजना के निर्माण के पश्चात कोसी नदी वरदान स्वरूप अपनी निर्मल धारा से कोशी क्षेत्र की समृद्धि में योगदान कर रही है। इसके अन्तर्गत पड़ने वाले क्षेत्र मुख्यतः पूर्णिया, मधेपुरा, सहरसा, अररिया, फारबिसगंज आदि अब निरन्तर तीव्र विकास की ओर अग्रसर हैं। बिहार सरकार ने कोसी में नहरों तथा विद्युत उत्पादन की दिशा में व्यापक कार्ययोजना तैयार की है।